Postal Regn. No. C.G./RYP DN/65/2022-24
आर.एन.आई.पंजीयन क्र. CHHHIN/2017/72506
रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका
प्रकाशन तिथि, 1 अप्रैल 2024

किलोल

वर्ष 8 अंक 4, अप्रैल 2024

SUMMER CAMP

http://www.kilol.co.in
स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY SOCIETY
COME LETS FLY

म. नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य
खुदरा 80/-
वार्षिक 720/-
आजीवन 10000/-

संपादक- डॉ. रचना अजमेरा

सह-संपादक- डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, डॉ. पी सी लाल यादव, बलदाऊ राम साहू, धारा यादव, गंगाधर साहू, नेम सिंह कौशिक

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ- रामचरण साहू

अपनी बात

प्यारे बच्चों ,

आपको पता है,अप्रैल के महीने में ही हिंदी पंचाग के अनुसार हिंदी नव वर्ष का आरंभ होता है। विक्रम संवत के अनुसार 9 अप्रैल से हिंदी नव वर्ष आरंभ हो रही है। आप सभी को हिंदी नव वर्ष की ढेर सारी बधाई शुभकामनाएं ।

अप्रैल माह हम सब के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है ।इस माह में ही हमारे देश के महान सपूत डॉ बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर जी का जन्म दिवस जो आता है। जिन्होंने दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत के संविधान का निर्माण किया है। वे मानते थे कि देश के प्रत्येक व्यक्ति चाहे किसी जाति, धर्म या लिंग का हो सबको समान शिक्षा पाने व आगे बढ़ने का अधिकार है। उनके द्वारा बनाये संविधान से ही हम उत्तरोत्तर प्रगति कर पा रहे है।

अब आपका परीक्षा परिणाम आ गया होगा। हो सकता है आप परिणाम से संतुष्ट न हो, लेकिन निराश होने की आवश्यकता नही है। अब आप अपनी अगली कक्षा की पढ़ाई की तैयारी के साथ कुछ नया करने ,सीखने में मन लगाकर जुट जाए।आपको मेहनत के अनुसार सफलता निश्चित मिलेगी ।

अरे ! हाँ एक बात और, आप किलोल पढ़ना और अपनी रचनाएं भेजना न भूलें आपकी रचनाओं का हमें इंतिजार रहता है।

आपकी अपनी

डॉ रचना अजमेरा

संस्थापक- डॉ. आलोक शुक्ला
मुद्रक कीरत पाल सलूजा तथा प्रकाशक श्यामा तिवारी द्वारा
- विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी म. न. 580/1 गली न. 17बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर, छ. ग. के पक्ष में.
सलूजा ग्राफिक्स 108-109, दुबे कॉलोनी, विधान सभा रोड़, मोवा जिला रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रित
तथा विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, म.न.580/1 गली. न. 17 बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित, संपादक डॉ. रचना अजमेरा.

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी–

सच्ची शिक्षा

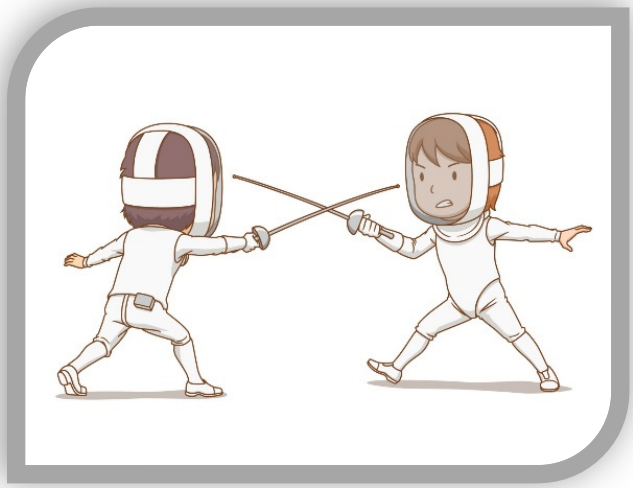

प्रवीण नाम का एक छोटा लड़का था. उसे तरह-तरह की युद्ध-कलाएं सीखने का बहुत शौक था. उसने एक योद्धा का बहुत नाम सुना था. लोग कहते थे कि उनके जैसा तलवार चलाने वाला आज तक नहीं हुआ.

प्रवीण के मन में इच्छा हुई कि उनके पास जाकर तलवार चलाने की शिक्षा ली जाए. वह उस शहर की ओर चल पड़ा, जहाँ वे रहते थे. प्रवीण ने योद्धा के पास जाकर विनती की कि वे उसे शिष्य बना लें.

योद्धा ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली. उन्होंने प्रवीण से कहा कि तलवारबाजी सीखने के कुछ नियम हैं. उसे उन नियमों का पालन करना होगा. प्रवीण ने स्वीकार कर लिया.

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

अगले दिन से योद्धा ने उसे समझा दिया कि उसे घर के क्या-क्या काम करने होंगे.प्रवीण सुबह से शाम तक घर की सफाई,झाड़ू-पोछा,कपड़े धोना,बर्तन साफ करना आदि यही सब काम करता रहता था.ऐसा करते हुए काफी दिन बीत गए.लेकिन योद्धा ने तलवारबाजी सिखाने का नाम तक नहीं लिया.

धीरे-धीरे प्रवीण का मन उखड़ने लगा.हर दिन वह इंतजार करता था कि शायद आज कुछ शुरुआत होगी,परन्तु जब ऐसा नहीं हुआ तो वह योद्धा के पास गया और बोला-₹श्रीमान जी !मेरी शिक्षा कब आरंभ होगी ?₹उसके गुरु ने कुछ नहीं कहा और चले गए.प्रवीण को बहुत अजीब लगा.

दूसरे दिन जब वह कपड़े धो रहा था.उसी समय उसके गुरु ने,अपने पाले हुए दोनों कुत्तों को वहाँ पर छोड़ दिए.दोनों कुत्ते,प्रवीण पर हमला करने लगा.वह अपने आप को कुत्ते के हमले से बचा ना पाया.उसने कुत्ते को देखकर बुरी तरह डर गया.और वह अपने गुरु को जोर-जोर से बचाओ-बचाओ कहकर चिल्लाने लगा.मगर उसके गुरु उसे देखते रहे.गुरु के सहायता न करने पर वह स्वयं किसी तरह वहाँ पर पड़े हुए वस्तुओं का सहारा लेकर,अपने आप को कुत्ते से बचा लिया.

गुरु के इस व्यवहार पर प्रवीण को बड़ा आश्चर्य हुआ कि उन्होंने मुझे कुत्तों से क्यों नहीं बचाया?... उसके बाद ऐसी घटनाएँ अक्सर होने लगीं.प्रवीण अब किसी भी हमला के लिए तैयार रहने लगा.वह हरदम सतर्क रहने लगा.यहाँ तक कि सोते समय भी वह आसपास का ध्यान रखने लगा.धीरे-धीरे उसने अपना बचाव करना सीख गया.

एक दिन गुरूजी तन्मयता से कुछ लिखने में व्यस्त थे. उसे देखकर प्रवीण के मन में एक अजीब विचार आया.वह गुरु के पास कुछ आवारा कुत्तों को छोड़ दिया.वह देखना चाहता था कि वे किस प्रकार से अपना बचाव करते हैं.आवारा कुत्तों ने चारों तरफ से गुरु के ऊपर हमला कर रहा था.लेकिन उसके गुरु हर पल इस तरह के हमले से बचने के लिए तैयार थे.उनके पास एक ढाल रखी थी.उन्होंने तुरंत वह ढाल उठाई और अपने आपको कुत्ते के हमले से बचा लिया.प्रवीण आश्चर्य से देखता रहा. उसने अपने बचाव की एक नई विधि सीख ली.

उसने गुरु से कहा-श्रीमान जी !मैं अब समझ गया हूँ कि मेरी शिक्षा आरंभ हो चुकी है.

योद्धा ने कहा-हाँ पुत्र,अच्छा तलवारबाज होने का मतलब यह नहीं है कि आप अपने प्रतिद्वंद्वी से अच्छी तलवार घुमाएं,बल्कि सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है - 'आत्मरक्षा' यानि कि किसी भी प्रहार से अपनी रक्षा करना.हमें सामने वाले के विचारों को पढ़ना आना चाहिए. प्रवीण ने काफी दिनों तक मन लगाकर अपने गुरु से शिक्षा ग्रहण की और तलवारबाजी में प्रवीण होकर अपने देश की सेवा में जुट गए.

सीमा यादव, प्रधान पाठक, शा. प्रा. शाला शीतलकुण्डा, मुंगेली, द्वारा भेजी गई कहानी

अब प्रवीण प्रतिदिन अपने गुरु के मार्गदर्शन में शिक्षा -दीक्षा लेने लगा. सुबह जल्दी उठकर योगाभ्यास करता और अभ्यास क्षेत्र में जाकर घंटों तलवार बाजी करता. इसी तरह से शाम को भी अपनी कला में निपुणता लाने के लिए प्रत्येक दिन अभ्यास करता रहा. इस तरह के कठोर परिश्रम से उसकी युद्ध कला में सम्पूर्णता आने लगी.

प्रवीण के गुरु ने बहुत प्रसन्नता के साथ अपने शिष्य को दक्ष करके बहुत सा आशीर्वाद प्रदान करते हुए उसे घर जाने की आज्ञा दीं.और प्रवीण भी अपने लक्ष्य में सफल हो चुका था. आज उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था. वह बार -बार अपने गुरु के प्रति कृतज्ञ व्यक्त करता रहा. अपने गुरु के नियम -सिद्धांतों का पालन करने का संकल्प लेते हुये अपने गाँव की ओर प्रस्थान करता है.

योगेश्वरी तंबोली जांजगीर द्वारा भेजी गई कहानी

प्रवीण ने अब योद्धा के पास आकर विनती की कि वह उसे शिष्य बना ले योद्धा ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली उन्होंने प्रवीण से कहा कि तलवारबाजी सीखने के कुछ नियम है उसे उन नियमों का पालन करना होगा। प्रवीण ने उसे स्वीकार कर लिया। अब प्रवीण मन लगाकर तलवारबाजी सीखने के लिए प्रतिदिन उस योद्धा के पास जाता उनके द्वारा बताए गए नियमों का

पालन करता दिन रात मेहनत करता कि वह उस योद्धा के समान तलवारबाजी कर पाए। विभिन्न युद्ध कलाएं उनसे सीखने लगा। योद्धा भी पूरी निष्ठा के साथ प्रवीण को युद्ध कलाएं सीखाने लगा। देखते ही देखते प्रवीण युद्ध कलाओं में निपुण हो गया। हर तरह से तलवार चलाना सीख गया। वह अब वापस अपने गांव आ गया। सभी को अपने युद्ध कला के बारे में बताने लगा कि उसने सभी युद्ध कलाएं सीख ली है उसे अब अपने आप में गर्व होने लगा कि उससे बड़ा कोई तलवार बाज नहीं है एक दिन जब वह गांव के एक वृद्ध व्यक्ति को युद्ध के लिए ललकारा तो वह वृद्ध प्रवीण के अंदर के घमंड को समझ गया और उससे युद्ध करने को तैयार हो गया। उसे पता था कि प्रवीण के अंदर तलवारबाजी का घमंड आ गया है और इस घमंड के कारण ही उसका पतन होगा।जोश ही जोश में प्रवीण युद्ध के नियमों का पालन करना भूल गया और लड़ने लगा कुछ ही समय बाद वह बुरी तरह से हार गया। वह अब हाथ जोड़कर उस वृद्ध से माफी मांगने लगा और कहने लगा मुझे माफ कर दो मेरे अंदर तलवारबाजी करने का घमंड शामिल हो गया था । अभी मुझे बहुत कुछ सीखना बाकी है मुझे माफ कर दो वृद्ध ने उसे माफ कर दिया और कहा दोबारा अपने ऊपर युद्ध कला का घमंड मत आने देना तभी सर्वश्रेष्ठ तलवार बाज बन सकते हो। यह कहकर चला गया बाद में पता चला कि वह वृद्ध वही महान योद्धा था जिससे प्रवीण युद्ध कला सीख कर आया था प्रवीण की आंखें खुल गई उस योद्धा ने प्रवीण को सच्ची शिक्षा का पाठ सिखा दिया।

प्रियंका सिंह शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला पंपानगर विकासखंड रामानुजनगर जिला सूरजपुर द्वारा भेजी गई कहानी

प्रवीण ने गुरु से कहा- मुझे किस तरह के नियमों का पालन करना होगा गुरुजी ! तब योद्धा ने बताना शुरू किया । मैं तुम्हें जो भी नियम बता रहा हूं । उसे पूरी श्रद्धा से आजीवन निभाना होगा तभी तुम जीवन में हर कदम पर कामयाबी पाओगे । पहला नियम- तुम अपनी तलवारबाजी की शिक्षा का उपयोग समाज और देश हित में ही करोगे । जरूरतमंदों की मदद करोगे और अपनी शिक्षा पर घमंड नहीं करोगे। दूसरा नियम- तुम अपनी तलवार से कभी किसी निर्दोष व्यक्ति या पशु पर वार नहीं करोगे तीसरा नियम- तुम अपने स्वार्थ के लिए अपनी शिक्षा को व्यवसाय का रूप कभी नहीं दोगे धन अर्जन के लिए तुम अपनी शिक्षा का प्रयोग बिल्कुल नहीं करोगे । प्रवीण ने अपने गुरु की सभी बातों और नियमों को शिरोधार्य किया और उन्हें आश्वस्त किया कि वह उनके सारे नियम का पालन करेगा ।

अब प्रवीण प्रतिदिन तलवारबाजी सीखने लगा और एक दिन इस कला में पूरी तरह निपुण हो गया । उसकी तलवारबाजी के चर्चे दूर-दूर तक होने लगे । गुरु भी उससे काफी प्रसन्न थे । वह गुरु का प्रिय शिष्य बन चुका था । जब उसकी शिक्षा पूर्ण हुई तब वह गुरु के पास गया और गुरु से अपनी गुरु दक्षिणा मांगने हेतु आग्रह किया । परंतु योद्धा ने प्रवीण से कहा कि मैं समय आने पर तुमसे गुरु दक्षिणा ले लूंगा । इतना सुनकर प्रवीण ने गुरु से कहा जैसी आपकी इच्छा गुरुजी ! उसने गुरु के चरण स्पर्श किए और गुरु से आज्ञा ले विदा ली । और अपने घर चला गया । उसने कुछ साल बाद विवाह कर लिया और विवाह के एक साल बाद उसे एक पुत्र रत्न प्राप्त हुआ । प्रवीण अपने घर में इकलौता कमाने वाला था । उसे गरीबी का सामना करना पड़ा । उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह अपने परिवार का लालन-पालन कैसे करे । उसके तलवारबाजी के चर्चे दूर-दूर तक थे । कई विद्यार्थी उससे तलवारबाजी की शिक्षा लेना चाहते थे । तथा उसके शिष्य बनने हेतु लालायित थे । कोई ना कोई विद्यार्थी प्रतिदिन उससे मिलने आते और तलवारबाजी सीखने की इच्छा जाहिर करते । शुरू में प्रवीण ने सभी को तलवारबाजी की निःशुल्क शिक्षा दी । परंतु विद्यार्थियों की संख्या बहुत अधिक होने पर उसके मन में लालच के भाव आ गए । उसने तलवारबाजी की शिक्षा के बदले कुछ पैसे लेने की सोची और ऐसा करने से उसकी आर्थिक स्थिति सुधरने लगी । दिन पर दिन वह अमीर होता गया और उसके व्यवहार में तब्दीली आने लगी । वह घमंडी हो गया । तलवारबाजी सिखा कर अधिक से अधिक पैसे कमाने की उसकी इच्छा और प्रबल होती जा रही थी । कई विद्यार्थी पैसे ना दे पाने की वजह से तलवारबाजी की शिक्षा लेने में असमर्थ थे । और यह बात प्रवीण के गुरु को भी पता चली । गुरु ने अपने शिष्य की परीक्षा लेने की सोची वह भेष बदलकर उसके घर पर आए और उन्होंने बाहर से ही आवाज लगाई । घर पर कोई है क्या ? मैं बहुत दूर से आया हूं मैंने दो-तीन दिनों से खाना नहीं खाया है कृपया मुझे खाने को कुछ दे दें । भगवान आपका भला करेगा । प्रवीण की पत्नी बाहर आई और उसने देखा कि फटे पुराने कपड़ों में एक

बुजुर्ग भिखारी दरवाजे पर बैठा है । उसने अंदर जाकर प्रवीण को इस बात की सूचना दी । प्रवीण ने बाहर आकर बुजुर्ग भिखारी का अनादर करते हुए दरवाजे से चले जाने के लिए कहा । परंतु प्रवीण की पत्नी ने प्रवीण को ऐसा करने से रोका और कहा घर पर आए मेहमान को बिना भोजन कराए हम कैसे जाने दे सकते हैं । और घर के अंदर चली गई और एक थाली में भोजन लगाकर उन्हें आदर पूर्वक परोसा । भिखारी के भेष में आए गुरु को प्रवीण की पत्नी की उदारता देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई । और उन्होंने भोजन ग्रहण किया । और भोजन उपरांत उन्होंने प्रवीण और उसकी पत्नी को धन्यवाद देते हुए सदा खुश रहने का आशीर्वाद दिया । जाते जाते उन्होंने दीवार पर मयान में रखे तलवार की ओर देखकर प्रवीण से पूछा बेटा क्या मैं तुमसे एक सवाल पूछ सकता हूं ? प्रवीण ने कहा हां पूछिए तब उन्होंने कहा तुमने तलवारबाजी कहां से सीखी है ? मैंने भी तुम्हारी तलवारबाजी के चर्चे बहुत सुने हैं । प्रवीण जो अपने गुरु की सीख भूल गया था । और जिसके मन मस्तिष्क में घमंड का वास हो गया था । उसने इतराते हुए जवाब दिया मैं विश्व प्रसिद्ध तलवारबाज हूं भला मुझे कौन सिखा सकता है । मैंने यह तलवारबाजी स्वयं से सीखी है । गुरु को यह सुनकर बहुत दुख हुआ कि उनका प्रिय शिष्य उनकी दी हुई सीख भूल गया । लोगों के द्वारा उन्होंने प्रवीण के बारे में जो कुछ भी सुना था । सब सही पाया । उन्होंने प्रवीण से कहा ठीक है बेटा तो मैं चलता हूं । तब प्रवीण ने कुछ सोचकर उन्हें रोकते हुए पूछा कि आप कहां से आए हैं और आप कौन हैं । उसके गुरु जो बहुत दुखी और शर्मिंदा थे । अपने वास्तविक वेशभूषा में आ गए । प्रवीण ने जब अपने गुरु को अपने समक्ष देखा । उसे अपनी भूल का एहसास हुआ । उसने गुरु के पैर पकड़ लिए और फूट-फूट कर रोने लगा और अपने गुरु से क्षमा मांगने लगा और जीवन में दोबारा ऐसी गलती न करने की बात कही । गुरु को प्रवीण पर दया आ गई उन्होंने प्रवीण को उठाया और अपने सीने से लगा लिया । गुरु ने उसे माफ कर दिया और कहा तुम्हें याद है तुमने मुझे गुरु दक्षिणा मांगने हेतु कहा था और मैं समय आने पर मांगने की बात कही थी प्रवीण ने कहा जी गुरुजी बताइए आपको गुरु दक्षिणा में क्या चाहिए मैं अपना जीवन आपको अर्पित कर सकता हूं तब गुरु ने कहा कि तुम्हें अपने सारे गलत कार्य छोड़ने होंगे यही मेरी गुरु दक्षिणा होगी इतना कहकर वे वहां से चले गए ।

उसके बाद से प्रवीण ने अपने सारे गलत कार्य छोड़ दिए । और सच्चाई के मार्ग पर चलने लगा उसे गुरु की दी हुई सच्ची शिक्षा का मोल पता चल गया था । और गुरु के आशीर्वाद और सच्ची शिक्षा के मार्ग पर चलकर प्रवीण एक दिन बहुत बड़ा तलवार बाज बना ।

श्रीमती ज्योति बनाफर शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला मटका जिला बेमेतरा द्वारा भेजी गई कहानी

प्रवीण ने उसके सारे नियम तो स्वीकार कर लिए थे।पर एक नियम उसे बार-बार खटक रहा था वह यह था कि उस योद्धा के दुश्मन को अपना दुश्मन भी मानना होगा। और जरूरत पडने पर युद्ध भी करना होगा।प्रवीण इस बात को बहुत अच्छे से जानता था कि उनके राज्य और जिस योद्धा से वह तलवारबाजी सिखाने आया है उनका राज्य दोनों की आपस में बहुत पुरानी दुश्मनी है जो कभी दोस्ती में नहीं बदल सकती।प्रवीण सोचने लगा ऐसा युद्ध कला किस काम का जो मेरे राज्य मेरे देश के काम ना आए और इसके विपरीत मैं अपने देश अपने राज्य के साथ युद्ध करूंगा जो मेरी जन्मभूमि है। जब योद्धा को यह बात पता चली तो वह उसे पर बहुत दबाव डाला कि यदि तुम एक अच्छे योद्धा बन जाओगे तो ना तुम्हारे पास राज्य की कमी होगी और ना धन दौलत की।

तुम्हारा जीवन बहुत आनंदपूर्वक कटेगा। एक पल के लिए तो प्रवीण डगमगा गया। उसके बाद प्रवीण ने निर्णय लिया कि ऐसा युद्ध कला किस काम का जो मेरे राज्य की काम ना आये।और यदि मुझे धन दौलत राज्य पानी की लालसा में यदि मैं अपने जन्मभूमि के साथ गद्दारी करूं तो भगवान मुझे कभी माफ नहीं करेगा।यह सोचकर प्रवीण ने उस योद्धा से कहा कि मुझे आपका यह नियम स्वीकार नहीं है क्योंकि यदि आज में किसी युद्ध कला में पारंगत होता हूं तो मैं अपने राज्य के लिए एक अच्छा सैनिक साबित होऊँगा।मैं उसे अपने राज्य के लिए इस्तेमाल करूंगा ना कि अपने राज्य से विपरीत होकर।और फिर किसी दूसरे गुरु की तलाश में निकल पड़ा। सच्ची शिक्षा वही है जो अपने देश,राज्य,जन्मभूमि ,समाज परिवार के लिए काम आए

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

“ प्रयास ”

एक गांव में आग लग गई। सबके घरों में आग बढ़ती ही जा रही थी और गांव के लोग अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भाग रहे थे। तभी झोपड़ी के किनारे पेड़ पर बैठी हुई चिड़िया ने यह दृश्य देखा। फिर चिड़िया ने अपनी चोंच में पानी भरकर झोपड़ी की आग को बुझाने का प्रयास शुरू करने लगी।

वह बार-बार अपनी चोंच में पानी भर कर लाती और आग में डालती। जब गांव के कुछ लोगों ने चिड़िया को पानी डालते देखा तो वह भी जोश में आ गए और उन्होंने कहा जब चिड़िया कोशिश कर सकती है तो हम क्यों नहीं? और फिर गांव वालों ने मिलकर आग बुझाने के लिए पानी डालना शुरू किया। दूसरे पेड़ पर बैठा कौआ यह सब देख रहा था

इसके आगे क्या हुआ होगा? इस कहानी को पूरा कीजिए और इस माह की पंद्रह तारीख तक हमें kilolmagazine@gmail.com पर भेज दीजिए.चुनी गई कहानी हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी–

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रकाशित कर रहे हैं-

संतोष कुमार कौशिक शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय ककेड़ी,
जिला-मुंगेली (छत्तीसगढ़), द्वारा पूरी की गई कहानी

चालाक चिड़िया

चिड़िया की कहानियाँ बच्चों के लिए मनोरंजक होती हैं.चालाक चिड़िया एक ऐसी मनमोहक कहानी है जो,बच्चों को उनके मानवीय गुणों से परिचित कराएगी. एक गाँव में नदी के किनारे एक खेत था.जहाँ एक किसान रहता था और नदी की दूसरी तरफ एक पेड़ था,जहाँ बहुत से पक्षी रहते थे.उन्हीं पक्षियों में,एक चालाक चिड़िया भी थी जो,सभी पक्षियों का नेतृत्व करती थी.हर साल किसान अपने खेतों में अनाज बोता लेकिन,पक्षी कुछ दाने खा जाया करते थे.जिससे किसान की पैदावार में कमी हो जाती थीकिसान ने पक्षियों से परेशान होकर,उन्हें भगाने की योजना बनायी.उसके घर में एक बिल्ली थी.जो लालची

एवं चालक प्रवृत्ति के थे.जिसे खेत की रखवाली के लिए उसे छोड़ दिया.वह बिल्ली पेड़ के नीचे छुपकर बैठा रहता, जैसे ही चिड़िया दाना खाने आते वैसे ही बिल्ली उसे पकड़ कर खा जाता था|

चालाक चिड़िया,उस वक़्त कुछ पक्षियों के साथ,दूसरे खेत में भ्रमण करने गयी हुई थी.इधर बिल्ली,बारी-बारी करके चिड़िया को अपना शिकार बनाते गई.वहाँ मौजूद पक्षी एक-एक करके, बिल्ली के जाल में फंसते गए.देखते ही देखते,किसान अपनी चाल में कामयाब होने लगा.चालाक चिड़िया,अपने साथी पक्षियों के अचानक, गायब हो जाने से चिंतित थी.चिड़िया ने अपने मीठे स्वर से,जोर-जोर से आवाज लगाना शुरू कर दिया.उसकी आवाज सुनते ही, आस पास मौजूद,बचे हुए पक्षी,इकट्ठे हो गए.

चिड़िया ने सभी पक्षियों को,आगाह करते हुए कहा-"इस इंसान ने बिल्ली की मदद से हमारे सभी साथियों को पकड़कर उसका भोजन बना दिया है और बचे हुए पक्षियों को भी,बिल्ली के जाल में फँसाने के लिए तैयारी किए हुए हैं.₹इसलिए हमें यह इलाका छोड़कर,दूसरे जगह जाना होगा.वरना हम सब,बिल्ली के शिकार बन जाएंगे.यह कहकर चालाक चिड़िया के साथ सभी पक्षी दूसरे जंगल में चले गए.जंगल में पहले से मौजूद पक्षी, चालाक चिड़िया से बताते हैं कि-" इस जंगल में किसी का शिकार बनने का कोई डर नहीं है.निश्चिंत होकर यहाँ निवास करें.₹तभी चालक चिड़िया ने कहा-₹ यहाँ बहुत अच्छा लग रहा है और खाने की भी कोई कमी नहीं है|"

चालाक चिड़िया,इस जंगल के चिड़ियों से मिलकर बहुत ख़ुश थी.उसने तय किया कि,अब वह किसान के खेत पर वापस लौट कर कभी नहीं जाएगी.अगले ही पल चिड़िया,अपने दोस्तों के साथ जंगल की हरियाली के बीचों-बीच,फुदकने लगी.इधर किसान,अपने खेतों के आसपास पक्षियों को नहीं होने पर बहुत खुश था.उसे लग रहा था कि,अब उसकी फसल को कोई नुकसान नहीं पहुँचाएगा.लेकिन उसका भ्रम टूट गया.जब उसने अपनी फसल की पैदावार देखी.फसलों को कीड़ों ने नष्ट कर दिया था.किसान को कुछ समझ में ही नहीं रहा था.क्योंकि इस बार उसकी फसल,हर बार से ज्यादा बर्बाद हुई थी.वह रोते हुए,गाँव के ही एक अनुभवी बुजुर्ग किसान के पास पहुँचा और वहाँ,अपने खेत की दुर्दशा बयान करने लगा.बूढ़ा किसान हँसते हुए बोला-तुमने अपने खेत के रक्षकों को ही हटा दिया है.जिस कारण कीड़ों से तुम्हारे खेत को,भला कौन बचाता?

किसान ने रोते हुए कहा-मैं आपकी बात समझा नहीं.तभी बुजुर्ग किसान ने उसे समझाते हुए कहा कि इस प्रकृति में मौजूद पशु-पक्षी, जीव-जन्तु आदि मानवीय तंत्र को,जीवित रखने के लिए अनिवार्य हैं.जिन पक्षियों को तुमने बिल्ली का भोजन बनाया है.शेष बचे हुए पक्षी दूसरे जंगल में चले गए.वही पक्षी,तुम्हारी फसलों को,कीड़ों से बचाते थे.तुमने पक्षियों को खेत से हटाकर,प्रकृति का नियम तोड़ा है. जिसकी सजा तो,तुम्हें मिलनी ही थी.अब तुम्हारा एक ही प्रायश्चित है.दोबारा पक्षियों को बुलाने के लिए,अपने खेत में कुछ फलों के पेड़ लगाओ जिससे,पक्षी पुनः तुम्हारे खेत के आस पास पहुँच सकें और आगे से,कीड़ों से तुम्हारे फसलों की सुरक्षा हो सके.

किसान को अपनी मूर्खता से बहुत पछतावा हो रहा था.वह जंगल से सभी पक्षी तो वापस नहीं ला सकता लेकिन,उसने अपने खेत के आस पास,पक्षियों के लिए कई घोंसलों का निर्माण कर दिया और बिल्ली को भी वहाँ से हटा दिया गया.पक्षियों के आने का इंतज़ार करने लगा.कुछ दिन पश्चात वहाँ पुनः चिड़ियों का आगमन हुआ और वहाँ पर चिड़ियों के चहकने की आवाज आने लगी.जिसे सुनकर किसान बहुत खुश हुआ.वह किसान चिड़ियों के लिए दाने डालने लगा.सभी चिड़ियां एवं किसान वहाँ प्यार से रहने लगा.

कुमारी पायल जोशी
कक्षा तीसरी,शासकीय प्राथमिक शाला शीतलकुण्डा, जिला मुंगेली, द्वारा पूरी की गई कहानी

एक पेड़ पर चिड़िया बैठी थी. तभी एक बिल्ली आई. उसे देखकर चिड़िया डर गयी. फिर बिल्ली उससे कहती है मैं तुम्हें मारकर तुम्हारा शिकार करुँगी. यह सुनकर चिड़िया कहती है मैं तो उड़ जाऊँगी,तुम मुझे नहीं पकड़ पाओगी. इस तरह चिड़िया अपने मन में साहस रखते हुये योजना बना ली थी. कुछ देर में ही बिल्ली झपट्टा मारने के लिए जोर से लपकी तो उसके हाथों से छूटकर तेजी से चिड़िया उड़ गयी |

अनीशा पैकराकक्षा आठवीं शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला पंपानगर,
रामानुजनगर जिला सूरजपुर द्वारा पूरी की गई कहानी

एक जंगल में एक पेड़ पर पीहू नाम की एक चिड़िया रहती थी और उसी जंगल में एक चीता रहता था वह बहुत ही घमंडी और निर्दयी था । उसे अपनी ताकत पर बहुत घमंड था । जंगल में रहने वाले बाकी भी जानवर उसे बिल्कुल पसंद नहीं करते थे । पीहू के छोटे-छोटे बच्चे थे । जिनसे वो बहुत प्यार करती थी । एक दिन आकाश में काले अंधेरे घने बादल छाए हुए थे । मौसम बहुत खराब था । बेचारी पीहू चिड़िया बहुत परेशान थी तेज आंधी तूफान के साथ बारिश होने लगी ।

देखते ही देखते पीहू का घोंसला पूरा भीग गया । घोंसला बस उजड़ने को था । उसके बच्चे ठंड से कांप रहे थे । पीहू चिड़िया बच्चों को लेकर बहुत चिंतित थी कि कैसे उन्हें इस बारिश से बचाए ? तभी उसने देखा चीता छाता लेकर वहां से गुजर रहा था । पीहू चिड़िया ने चीता के पास जाकर छाता मांगने की सोची । बिना देर किए वह उस चीते के पास जाकर बोली । चीता भाई आप मुझे यह छतरी दे दीजिए । मेरे बच्चे इस बारिश की वजह से पूरे भीग गए हैं । और मेरा घोंसला भी टूटने ही वाला है । मेरे बच्चे बहुत छोटे हैं यदि मैंने समय रहते कुछ नहीं किया तो मेरे बच्चे ठंड से मर जाएंगे । आप मुझे यह छाता दे दीजिए । बड़ी कृपा होगी । मैं आपका यह एहसान जिंदगी भर नहीं भूलूंगी ।

और आपको कभी भी मेरी जरूरत होगी तो मैं आपकी मदद जरूर करूंगी । चीता उसकी बात सुनकर गुस्से में तुनककर कर बोला कि मैं तुम्हें यह छाता क्यों दूं । मैं भी तो भीग जाऊंगा और तुम तो एक छोटी सी चिड़िया हो । भला तुम मेरी क्या मदद कर सकती हो और उसने उसे छाता देने से साफ इनकार कर दिया । पीहू चिड़िया उसके सामने बहुत रोई गिड़गिड़ाई पर उसके ऊपर उसके अनुनय विनय का कोई असर नहीं हुआ । पीहू चिड़िया को अपने बच्चों को बचाने का और कोई भी दूसरा रास्ता नजर नहीं आ रहा था । उसे कुछ भी करके सिर्फ अपने बच्चों को बचाना था । उसने साहस जुटाते हुए उस चीता से छाते को छीनने की सोची और अपनी जान की भी परवाह न करते हुए उसने बड़ी तेजी से उड़ते हुए चीता के हाथ से छाते को झटके से छीन लिया और पेड़ के ऊपर उस डाल पर ले जाकर रख दिया जहां उसका घोंसला था ।

चीता पेड़ पर चढ़ने का प्रयास करने लगा । लेकिन बारिश की वजह से वह बार-बार फिसलता और नीचे धड़ाम से गिर जाता । वह चाह कर भी कुछ नहीं कर सका । चीता पीहू चिड़िया के साहस को देखकर दंग रह गया और हाथ मलता रह गया । बारिश के रुकते ही पीहू ने उस छाते को उल्टा किया और अपने बच्चों को उसमें रख लिया । और छाते की डंडी को चोंच में दबाकर उड़ गई और बहुत दूर चली गई फिर वह उस जंगल में कभी वापस नहीं लौटी । इस तरह वह अपने बच्चों के

साथ खुशी-खुशी जीवन व्यतीत करने लगी । और उस चीते को भी अपने किए पर बहुत पछतावा हुआ । उसने फिर कभी किसी को परेशान नहीं किया ।

कुमारी पायल जोशी कक्षा तीसरी, शा. प्रा. शाला शीतलकुण्डा, मुंगेली, द्वारा पूरी की गई कहानी

एक चिड़िया पेड़ पर बैठी थी. उसी रास्ते से एक बिल्ली शिकार की खोज में निकली थी. तभी उसकी नजर पेड़ पर बैठी चिड़िया पर पड़ी. और चिड़िया की तरफ देखकर जोर से उछल- कूद करती है. इधर बिल्ली को देखकर चिड़िया इस टहनी से उस टहनी में उड़ती जाती है. काफी देर तक दोनों ऐसा करते रहे.बिल्ली अंत में थक गयी, तो वह वही पस्त होकर सो गयी. और चिड़िया दूसरे पेड़ की ओर उससे बचते हुए चली जाती है

.

संगीता निषाद कक्षा-आठवीं शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला ककेड़ी, जिला-मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी

बिल्ली की मदद

एक गाँव में रमा अपने माता-पिता के साथ रहती थी.रमा के माता-पिता बहुत अमीर थे.फिर भी उन्हें अपनी चीजों पर जरा भी उन्हें घमंड नहीं था.रमा बहुत ही सुशील और दयालु स्वभाव की थी.वह सभी की मदद करती थी. रमा के पास एक बिल्ली भी थी. जो काफी दिनों से उसके घर में रहती थी.

एक दिन रमा अपनी बिल्ली को लेकर बाजार गई.वह सब्जी लेने में व्यस्त थी.उसे अपनी बिल्ली का याद नहीं आई और वे आगे निकल गई.वे दोनों एक दूसरे से बिछड़ गए.वहाँ पर पास में एक सुंदर सा जंगल था.उसे देखकर बिल्ली वहाँ घुस गई.वह बहुत दूर तक जंगल में चली गई.वापस आना चाहती थी,लेकिन उन्होंने अपने घर का रास्ता भूल गया था.दिन भर वह जंगल में घूमता ही रहा.शाम हो गई,बिल्ली डरने लगी.वह एक पेड़ के नीचे जाकर खड़ी हो गई और इधर-उधर देखती रही.तभी बिल्ली की नजर पेड़ पर बैठी चिड़िया पर पड़ी. बिल्ली बहुत परेशान थी.उसके पास आकर चिड़िया ने कहा-₹आप कौन हैं और यह घने जंगल में क्या कर रही हो?₹तभी बिल्ली ने कहा-चिड़िया बहन,मैं पास के गाँव में रहती हूँ |मैंने बाजार,अपने मालकिन रमा दीदी के साथ आई थी.बाजार में हम दोनों बिछड़ गए और घर जाने के चक्कर मैं जंगल में फस गई.क्या आप मेरी मदद कर सकती हो?तब चिड़िया बोली-तुम्हें घबराने की बात नहीं,मैं आपकी मदद करुँगी.आप मेरे पीछे-पीछे आना, मैं आपको घर तक छोड़ दूंगी.

फिर चिड़िया आगे-आगे उड़ती गईऔर बिल्ली पीछे-पीछे चलती गई. गाँव का रास्ता अभी तक दिखाई नहीं दे रहा था.कुछ दूर चलने के पश्चात अचानक बिल्ली को रमा दिखाई दिया.जो बिल्ली को ढूंढते ढूंढते आ रही थी.रमा को देखकर बिल्ली और चिड़िया वहीं रुक गई.बिल्ली,रमा से चिड़िया को परिचित कराते हैं और अपने बिछड़े हुए पल के बारे में बताते हैं.रमा और बिल्ली चिड़िया को धन्यवाद देते हैं और कहते हैं-चिड़िया बहन,यह बिल्ली आपकी मदद से हमें मिला है. आपको कभी भी,कुछ चीज की जरूरत हो तो हमारे घर आना. चिड़िया उन दोनों के प्रेम को देखकर बहुत खुश हो जाता है और वह इस सम्मान के बदले उन दोनों को धन्यवाद देता है..

दिव्यानी साहू कक्षा-आठवीं, शाला-शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला ककेड़ी,

जिला-मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी

चिड़िया और बिल्ली की दोस्ती

एक गांव में एक समझदार बिल्ली रहती थी.उसी गांव के पास एक सुंदर सा जंगल था.उसी जंगल में एक चिड़िया रहती है,जो बिल्ली के बचपन की दोस्त थी.बिल्ली को चिड़िया से मिले काफी दिन हो गए थे.जिस कारण एक दिन बिल्ली चिड़िया से मिलने जंगल जाती है.

बिल्ली अपने दोस्त चिड़िया को ढूंढते हुए जंगल में बहुत दूर चली जाती है.लेकिन उसे कहीं पर उसका दोस्त नहीं मिला.जिस कारण वह घर आना चाहती थी. परंतु वह वापस घर आने का रास्ता भी भूल जाती है.वह इधर-उधर भटकती रहती है.काफी देर हो गया था.अब बिल्ली को डर लगने लगा.बिल्ली एक पेड़ के नीचे जाकर चुपचाप खड़ी हो जाती है और इधर-उधर देखकर अपने दोस्त चिड़िया को आवाज लगाती है.तभी अचानक उस पेड़ के ऊपर से चिड़िया की चहचहाने की आवाज आती है. बिल्ली ऊपर की ओर देखकर बोली-₹चिड़िया बहन !मैं अपने बचपन के दोस्त मीनू से मिलने आई हूँ ₹चिड़िया मन ही मन सोचती है कि यह तो मेरी बचपन की दोस्त जैसी लग रही है. चिड़िया बोली अरे मित्र मेरा नाम मीनू है.मैं भी अपने बचपन की दोस्त बिल्ली का इंतजार करती रहती हूँ .सोचती हूँ कि मेरे दोस्त जरूरी किसी न किसी दिन पहुचेंगे.दोनों मन ही मन सोचती रहती हैऔर एक साथ बोलते हैं कि तुम ही मेरी बचपन की दोस्त हो.

वास्तव में दोनों दोस्त थे. दोनों एक दूसरे से मिलकर बहुत खुश होते हैं.जंगल में कुछ फल खाते हैं और मौज मस्ती करते रहते हैं.फिर दोनों को बात करते बहुत समय हो गया.समय का पता ही नहीं चला.सूर्य डूबने की स्थिति में रहता है.जिस कारण बिल्ली अपने घर जाना चाहती है. चिड़िया उसे घर का रास्ता बता कर वापस आ गई और वह बहुत देर तक अपने दोस्तों के साथ बिताए हुए पल अर्थातअच्छे दिन के बारे में सोचती रही.

आस्था तंबोली जांजगीर द्वारा पूरी की गई कहानी

एक बार की बात है मीनू बिल्ली को बहुत भूख लगी थी। वह आसपास के घरों में खाने के लिए कुछ ढूंढ रही थी ।मगर उसे आज कुछ भी खाने को नहीं मिला ।वह बहुत परेशान थी ।उसके बच्चे भी भूखे थे ।उनके लिए खाने की चीज ले जाना बहुत जरूरी था। वह खुद तो भूखी रह जाती मगर बच्चों को कैसे भूखा रखती वह आगे कुछ मिल जाए यह सोचकर आगे बढ़ी ।घर के बाहर एक पेड़ था जिसमें उसे एक चिड़िया दिखाई दी ।मीनू उससे बातें करने लगी और उसने अपने बच्चों के बारे में बताया ।उसने कहा मेरे बच्चे बहुत भूखे हैं उन्हें भूख से बचा लो पर चिड़िया तो स्वयं घोंसला की तलाश में थी कि उनके घर बन जाए दोनों अपने-अपने स्वार्थ में घिरे हुए थे ।दोनों ही एक दूसरे की मदद नहीं कर पा रहे थे ।तभी अचानक जोरों से बारिश होने लगी इतनी बारिश हुई की चिड़िया उड़कर घरों में चली गई और मीनू को कुछ मछलियां पानी में बहती हुई मिल गई जिसे लेकर वह अपने बच्चों के पास चली गई।

श्रीमती सुनीता सिंह राजपूत शास.पूर्वमाध्य. शाला कंतेली ,बेमेतरा द्वारा पूरी की गईकहानी

एक जंगल में एक बिल्ली रानी रहती थी , वह बिल्लो रानी के नाम से जानी जाती थी । बिल्लो रानी अपनी सुंदरता पर बहुत घमंड करती थी, और अपने आप को जंगल की श्रेष्ठ जानवर समझती थी, बिल्लो रानी सभी से कहती फिरती थी कि मैं जंगल के राजा शेर की मौसी हूं, तुम लोग मुझे देख कर अभिवादन किया करो और नमस्कार किया करो । बिल्लो रानी कहती की मैं जंगल के जिस रास्ते पर से होकर गुजरती हूं तुम लोग मुझे देखकर नमस्कार किया करो ,नमस्कार नहीं करने पर बिल्लो रानी नाराज हो हो जाती और कहती की क्यों रे पक्षियों तुम्हें तुम्हारे मां-बाप ने संस्कार नहीं दिए हैं क्या अपने से बड़ों की कैसे अभिवादन करना चाहिए । बिल्लो रानी की बात को एक पेड़ पर बैठी टुनटुनी नाम की चिड़िया सुन रही थी और उन्होंने पेड़ पर से ही बैठे-बैठे बिल्लो रानी से कहा , तुम अपने आप को क्या समझती हो तुम जंगल की रानी कैसे हो सकती हो , जंगल की राजा तो शेर है और शेरनी रानी है। बिल्लो रानी तुम ज्यादा घमंड और अकड़ मत दिखाया करो, टुनटुनी चिड़िया ने बिल्लो रानी को बहुत समझाया , कि वह घमंड ना करें इतने में एक बंटी कौवा भी उड़ते उड़ते वहां पर आ पहुंचा और उन्होंने भी बिल्लो रानी को देखकर अभिवादन नहीं किया ।

तब बिल्लो रानी ने बंटी कौवा से कहा , कि तुम्हारे माता-पिता ने भी तुम्हें संस्कार नहीं दिए हैं क्या, की किस तरह बड़ों का अभिवादन करना चाहिए । तुम्हारी तो जाती ही काली है लोग काले रंग से ही बहुत नफरत करते हैं और तुम्हारी आवाज को भी पसंद नहीं करते हैं लोग तुम्हें देखना पसंद नहीं करते ।क्योंकि तुम लोगों की आवाज ही इतनी कर्कश है। बिल्लो रानी की इस बात को सुनकर बंटी कौवा ने कहा , तुम अपने आप को क्या समझती हो ,तुम्हारी बिरादरी में कोई इज्जत ही नहीं है क्योंकि तुम लोग तो हमेशा सबके घर में चोरी कर कर अपनी पेट भरती हो , चोरी करना तो तुम्हारी जन्मजात आदत है और अपने आप को रानी समझती है , और और हमारे जितने भी पक्षी बहन है उनके अंडे और बच्चे को भी तुम चोरी कर कर खो देती हो , बंटी कौवा की बात को सुनकर बिल्लो रानी वहां से आगेनिकल ही रही थी कि रास्ते में कीचड़ से भरे हुए दलदल में फंस गई , और कीचड़ से निकलने का प्रयास करने लगी फिर भी वह निकल नहीं पा रही थी । तभी बिल्लो रानी ने सभी जंगल के पक्षियों से गुहार लगाई बचाओ बचाओ में संकट में फंस गई हूं अब मैं मरने वाली हूं कोई मेरी सहायता करो प्लीज मुझे बचा लो । बिल्लो रानी के बहुत ही आग्रह करने पर सभी पक्षियों ने बिल्लो रानी को उसे दलदल से जैसे तैसे कर उसे वहां से निकलने में सफल हुए , और बिल्लो रानी ने सभी पक्षियों एवं बंटी कौवा से भी माफी मांगी, और बिल्लो रानी ने सबको वचन दिए की आज के बाद मैं कभी तुम लोगों की अंडे और बच्चे को कभी भी नहीं खाऊंगी, और कभी घमंड नहीं करूंगी तुम लोगों ने मेरा आज आंख खोल दिए, उसके बाद बिल्लो रानी अपना समूह लेकर जंगल की ओर चल पड़ी और सभी पक्षी भी अपने-अपने घर को चल पड़े ।

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई-मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे

बालगीत

मेरे पापा, मेरे शिक्षक

जीवन के हर मोड़ पर, साथ मेरे है ।

राह दिखाई हैं आपने,जो राह दिखाई हैं ।।

पदचिन्हों के पीछे-पीछे, आजीवन चलती जाऊंगी।

जो राह दिखाई हैं आपने मै औरो को दिखलाउँगी ।।

खुद को मैने अकेला पाया याद आपकी बातें आया ।

आपके मार्गदर्शन से मेरा जीवन पुलकित हुआ है।

नयी पीढ़ीआंगन में देखकर प्रफुल्लित हुआ है।।

जो संस्कार मुझे मिला,जो ज्ञान मैने पाया है ।

खुश हो जाती हूँ सर पर भी ,छत्रछाया है।।

परोपकार, भाईचारा, मानवता, हमकों सिखलाई|

सच्चाई की दी हैं मिसाल हैं. सहानुभूति क्या दिखलाई।।

कान पकड़कर उठक बैठक, थी छड़ियो की बरसात हुई|

समझ न पायी उस क्षण मै, अनुशासन की शुरुआत हुई।।

मुखमंडल पर अंगार कभी, आँखों में निश्छल प्यार कभी|

अंतर में माँ की ममता थी, सोनार कभी लोहार भी।।

आप ही मेरे मार्गदर्शक ,शिक्षक ,और माथे का चंदन हो।

पापा आप मेरे प्रथम गुरु ,आपको कोटि कोटि वंदन है।।

कामिनी जोशी कस्तुरबा ग़ांधी बालिका आवासीय विद्यालय

दुल्लापुर बाजार कबीरधाम

रसीले आम

पीले पीले रसीले आम,

सबके मन को भाता आम..!!

बिन खाए कोई रह न पाए,

सबका जी ललचाता आम..!!

चौसा, दशहरी,लंगड़ा आम,

तरह तरह के इनके नाम..!!

कुश,परी,प्रकाश,गीताली,

सब मिले चूसे मीठे आम..!!

कच्चा आम पक्का आम,

सबको खूब भाता आम...!!

जो खायेगा वो गायेगा,

फलों का राजा कहलाता आम..!!

प्रीतम कुमार साहू शिक्षक, भिलाई दुर्ग

होली

देखो देखो होली का त्योहार आया।
दुश्मनों ने भी हाथ मिलाया।
अपनों ने भी साथ निभाया।

देखो देखो होली का त्योहार आया
रंग लगाओ ढोल बजाओ ,
अपनों के संग होली मनाओ।

देखो देखो होली का त्योहार आया ,
रंगों का त्योहार आया।
मिठाइयों की मिठास संग में लाया है।
देखो देखो होली का त्योहार आया है।

रितु बसंत को भी संग में लाया है ,
हंसी ठिठोली का मौसम संग में लाया है।
देखो देखो होली का त्योहार आया , ।

पिचकारी चलाओ गुलाल उड़ाओ ,
गीत गाओ सबके संग होली मनाओ।
देखो देखो होली का त्योहार आया।

श्रीमती सुनीता सिंह राजपूत,
शिक्षक शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला कंतेली

हाय रे परीक्षा

जिस नाम को सुनने से डरता है हर बच्चा ,

परीक्षा का पेपर हाथ में हाथ आते ही।

इतना डर लगता है कि , अच्छा नहीं किया ,

तो घर पर पीटना पक्का है।

तीन घंटे में करने होते हैं चालीस सवाल ,

एक भी छुटा ,तो घर पर होता है बवाल ।

रिजल्ट के एक दिन पहले , रात को नींद नहीं आती है।

अच्छा नंबर लाने के लिए , भगवान को याद आती है।

रखते हैं विद्यार्थी भगवान का व्रत ,अगर फेल हुए तो लगता है होगा ,

पास होने पर मिलता है इनाम और मुख से निकलता है थैंक यू भगवान।

फिर आती है अगली कक्षा तब भी मुख से निकलता है ,हाय रे परीक्षा

श्रीमती सुनीता सिंह राजपूत, शिक्षक

शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला कंतेली

सुख

सुख का करते हैं जब हम इंतजार |
नहीं मिलने पर हो जाता है सब बेकार ||

दुःख से सभी इधर -उधर भागते हैं |
पर इससे जीवन में गुजरते सब है ||

सब कुछ अच्छा ही हो ये जरूरी तो नहीं है |
और सभी कुछ बुरा ही हो ये भी जरूरी नहीं है |

दो पल का जीवन है हे मेरे प्यारे साथियों |
इसे हँसते, गाते और गुनगुनाते जी लो जी भर के ||

आज नहीं तो कल आयेगा जरूर सुखों का वह पल|
आशा की किरणों को मन में जगाये रखना हरपल ||

सीमा यादव, मुंगेली

आओ हम खेले ऐसी होली

आओ हम खेले ऐसी होली
के प्रीत के रंग को रँगा जाएँ
प्रीत के रंग गुलाल लगाकर
एक दूसरे को गले लगा जाएँ।

यह अवसर है रंगोत्सव का
आओ मिलकर पर्व मनाएँ
गीले-शिकवे सब भूलकर
दुश्मन को भी मित्र बनाएँ।

है दौर दुर्भावना मिटाने का
आओ सद्भवना को फैलाएँ
आओ ईर्ष्या और जलन की
मिलकर सब होली जलाएँ।

अशोक पटेल तुस्मा,शिवरीनारायण

घड़ी परीक्षा की आई

घड़ी परीक्षा ,की है आई।
दिल दिमाग में ,डर है छाई।

साल भर का,है मेहनत अपना,
आंखों ने,देखा है सपना।

उस ओर, एक क़दम बढ़ाये।
परीक्षा से, बिल्कुल न घबराए।

चलो करें, उसकी तैयारी।
अभ्यास करें, हम बारी बारी।

कभी लिखाई-कभी पढ़ाई।
घड़ी परीक्षा की है आई।

जीवन चन्द्राकर लाल, MS खपरी, दुर्ग

रक्तदान

आओ करें हम एक शुभकाम।

दानों में है महादान।।

है अनमोल इक इक बूंद।

देता मानव को जीवन दान।।

होता इससे जन कल्याण।

बड़ा न कोई इससे दान।।

रक्तदान है महादान। आओ करें हम इक शुभ काम।।

है महान वह इंसान। बचाएं जो लोगों की जान।।

करे मानवता हित में काम। लगे ना इसमें कोई दाम।।

पर जो बचाएं जीवन। है वह दान रक्तदान।।

अब ना खोये कोई जान। आओ करे हम इक शुभकाम।।

आओ चलाएं हम अभियान। करे सभी अब रक्तदान।।

आती नही इससे कमजोरी। रक्तदान है भाई जरूरी।।

आओ बनाये अब पहचान। कठिन नही है अब रक्तदान।।

रक्तदान शिविर में लिखाये नाम। आओ करे हम इक शुभकाम।।

श्रीमती ज्योति बनाफर

शास. पूर्व माध्यमिक शाला मटका, बेमेतरा, छत्तीसगढ़

इक उड़ान अभी बाकी है

मानवता पर ना दाग लगाओ।
मुझे भी इस संसार में लाओ।।
कर दूंगी पूरे ख्वाब तुम्हारे।
जीने का मौका तो दिलाओ।।

नन्ही परी आज घर है आई।
किसी ने यह आग लगाई।।
जल्द हो जाएगी पराई।
इतनी जल्दी न ठुकराओ भाई।।

दो मुझे भी वह औजार।
जो दे जीवन को आकार।।
कर सकूं सारे सपने साकार।
दे दो शिक्षा का अधिकार।।

बंधना नहीं विवाह के बंधन में।
होना नहीं कैद गृहस्थी के पिंजरे में।।
खोना नहीं अनजान रिश्तों में।
करने दो अधूरा ख्वाब पूरा।।

बेटी होने का कर्ज़ चुकाऊँगी।
बहु होने का फर्ज निभाऊंगी।।
आत्मनिर्भर बन दुनिया जीत जाऊंगी।
चाहत है सिर्फ एक मौके की।।

श्रीमती ज्योती बनाफर, शास. पूर्व माध्य. शाला मटका,बेमेतरा, (छ.ग.)

बसंत

पलाश भी अब झूम उठे
नव कोपल भी खिल उठे
पत्ता और डाली हर्षाया है
तो समझो बसंत आया है

कोयल की राग है नियारी
सबकी लगती अति प्यारी
सुन्दर राग भी तो गाया है
तो समझो बसंत आया है

करवट बदलती है फिज़ा
सबसे अलग और है जुदा
प्रकृति में खुमार आया है
तो समझो बसंत आया है

तन प्रफुल्लित हो जाये
मन प्रफुल्लित हो जाये
प्रीत मन में गर समाया है
तो समझो बसंत आया है

फिज़ा में निखार है आई
मदमस्त बाहर भी है छाई
भंवरों का मन ललचाया है
तो समझो बसंत आया है

प्रमेशदीप मानिकपुरी

गर्मी आई गर्मी आई

स्कूल की छुट्टी हो गई भाई |

चलो खाएं आइसक्रीम मलाई ||

दूर घूमने जाएंगे |

खूब मजे उड़ाएंगे ||

अब ना होगी टोका टाकी |

छुट्टी में दो महीने बाकी ||

गन्ना रस हम लाएंगे ,दो गिलास पी जाएंगे |

नींबू से शरबत बनाकर , जल्दी से गटक जाएंगे ||

नानी के घर जाएंगे ,अचार खूब खाएंगे |

मामा मेरे प्यारे हैं ,मेरे राज दुलारे है ||

खीरे ककड़ी खाएंगे , खूब मजे उड़ाएंगे |

देखो देखो गर्मी आई ,धूप में तुम निकलो ना भाई ||

संतोष कर्ष, कोरबा

आने वाली है होली

आने वाली है अब होली।

खेलेंगे हम खूब रंग रंगोली।

जुट जाएंगे सब संगवारी।

हाथों में होगी पिचकारी।

और रंग देंगे दामन चोली।

उस दिन हम भूचाल करेंगे।

हर चेहरों को लाल करेंगे।

ढक देंगे हम सूरत भोली।

आने वाली है अब होली।

जीवन चन्द्राकरश्लाल" MS खपरी, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

हर हर महादेव

महाशिवरात्रि का पर्व है आया।
शिवालयो में उत्सव है छाया।।

आज भक्तो की पूरी हो जाय मांग।
चढ़ाए धतूरा, बेल पत्ता और भांग।।

सबके ह्रदय में रहते हैं सदैव।
देवो के देव हर हर महादेव।।

महादेव की महिमा है न्यारी ।
भक्तो के कष्ट हर देती सारी।।

विष अपने कंठ में धारण किए।
तब से वे नीलकंठ कहलाए।।

बदन में पहने देखो मृगछाला।
और गले में रुद्राक्ष की माला।।

जिसकी जटा से निकली है गंगा।
आज शिवजी का बज रहा डंका।।

जब जब दिव्य रूप देखूं इनका।
तब तब कष्ट मिटे मेरे मन का।।

शिव जी को चढ़ा एक लोटा जल।
तेरे हर समस्या का हो जायेगा हल।।

शिवजी का शब्दो में क्या बखान करूं।
हर हर महादेव का मैं गुणगान करूं।।

श्याम सुंदर साहू, राजिम जिला गरियाबंद (छ.ग)

मेहनत

मेहनत सफलता की कुंजी है।
यही सफल जीवन की पूंजी है।।

जीवन में कड़ी मेहनत जो करते।
सारे अरमान उनके पूरे हो जाते।।

मेहनत कभी बेकार नहीं जाता।
इसका फल जरूर है मिलता।।

जो मेहनत करने से जी चुराता।
जीवन में सफल नहीं हो पाता।।

आलस्य को चल दूर भगा।
मेहनत को अपने गले लगा।।

जीवन में कड़ी मेहनत को अपना।
तेरा पूरा हो जाएगा सारा सपना।।

मेहनत के पहिया जब जब घूमे।
सफलता सदैव उनके पांव चूमे।।

दुनिया की हर चीज तुझे मिलेगी।
मेहनत कर मंजिल जरूर मिलेगी।।

यदि सफल होना है मतकर आराम।
बार बार कहता है तुझसे ये श्याम।।

श्याम सुंदर साहू प्राचार्य
राजिम जिला गरियाबंद (छ.ग)

कुल्फी वाला

गरमी जब आती है, तो शीतलता हमें भाती है.
सब कुछ ठंडा- ठंडा खाने को मन करता है.

ठंडी हवा जब चलती है तो मन हमारा खिल जाता है.
खट्टे -मीठे आमरस मिल जाय तो बात सारी बन जाती है.

कुल्फी वाले भैया जब गाँव -गली में आते हैं.
सब बच्चे खुशी -खुशी दौड़ जाते हैं.
कुल्फी खाकर तन मन की गरमी से राहत सभी पाते हैं.

दही -मट्ठे की माँग दस गुनी बढ़ जाती है.
जब कहीं हरे -भरे पेड़ पौधे दिख पड़ते हैं

तो पतझड़ में भी बसंत खिल जाते हैं.
गरमी को ना कहना कभी आफत,
क्योंकि ये भी आसानी से खेलते- कूदते निकल जायेगी.

सीमा यादव, मुंगेली

देखो देखो आई होली

मन को कितना भाए लाल पीले रंग ,

आओ खेले दोस्तों संग ।

आपस में सब प्यार से खेले

दिल के सारे मैल धोले।

रंग-बिरंगे पिचकारी से सजी दुकाने

बच्चों के मन को आए लुभाने।

घर-घर में बनी मिठाई

राजू के घर में सब ने दावत खाई।

सबके चेहरे लाल ,नीले, पीले रंगों से सने

अरे मीना तुम, क्यों बैठी अनमने।

आओ खेलो हम सबके साथ

देखो देखो कई सारे रंग है हमारे हाथ।

मिटाओ सारे शिकवे गिले

प्यार से सबके मिलो गले।

देखो देखो आई होली

मन को कितना भाए होली।

श्रीमती राज किरण मिश्रा
कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय बेमेतरा

होली

रंगों का त्यौहार है होली ,रंग रंगीला त्यौहार है होली|

होली है भई होली है , प्यार भरी रंगोली है||

होली आज मानना है, आज रंगों से तुम्हें नहलाना है|

दूरियां सारी दिलों की मिटाना है, होली आज मानना है||

आओ सब मिलकर साथ चले, सबसे जाकर गले मिले|

रंग बिरंगी दुनिया में हर कोई लगता एक समान ||

भेदभाव को दूर भगाना, रंगों का यह मंगलगान |

आज हमें तुमको रंग लगाना है, होली आज मानना है ।।

कुमारी सुषमा बग्गा
शासकीय नवीन प्राथमिक शाला पारस नगर रायपुर

बस्ता

मैं हूं बस्ता मैं हूं बस्ता,
बच्चों की बातों पर हंसता,
देख बच्चों की हालत खस्ता,
ढूंढकर देता उनका रस्ता ।

बच्चों का हूं पक्का साथी,
पेन किताब मुझे है भाती,
पीठ पर मैं हूं आता जाता,
अपनी अहमियत बतलाता ।

बच्चे करते मुझसे प्यार,
स्कूल में है मेरी भरमार ,
मैं हूं यहा का एक सरदार,
लगता किताबों का दरबार ।

संजय जांगिङ 'भिरानी' अध्यापक,

बाङमेर, राजस्थान

जादुई पिटारा क्या है ?

जादुई पिटारा होता,है जहाँ खिलौना अपार।

जहाँ छिपा है खिलौनों का, रहस्यमयी संसार।

गुड्डा गुडियों की मुस्कान,है ज्ञान और विज्ञान।

हर खिलौना बढ़ाता है,विश्वास का भंडार।1।

पिटारे में छिपी है सीख,हर खिलौना कुछ कहता है।

सहनशीलता,धैर्य और निर्णय की क्षमता बढ़ाता है।

नाचती पुतलियाँ,होती खुशियों की झिलमिल कहानियाँ।

स्थानीय खेल-खिलौना से खेल खेलना सिखाता है।

जो करते सपनों का निर्माण, सजाते खिलौनों की दुकान।

बनाते हैं बच्चों के मस्तिष्क को,चिरस्थाई स्वर्ग समान।

सिखाते हैं वे कला, जो बच्चों को बनाते ज्ञानवान।

जादुई पिटारा से परिचय कराते,जीवन का ज्ञान विज्ञान।

सुन्दर लाल डडसेना

बाराडोली, सरायपाली,जिला-महासमुंद (छ. ग.)

चंदा मामा

इस दुनिया का हर, पत्ता पत्ता सीखता है|

बदलता है समय यह,हर एक परिवर्तन चाहता है ।|

चांद भी है बडा मस्ताना, तारों संग ही आता है |

घटता - बढ़ता दोहराना , रोज नया रूप बनाता है ।|

कभी देता भरपूर रोशनी, कभी अंधेरा छा जाता है|

बदलता है समय यह, हर एक परिवर्तन चाहता है ।|

आकर ना कभी निश्चित, ना रोशनी का तोड़ है |

पल भर में बदलती दुनिया, सभी का अपना जोड है ||

रेशमी चौधरी

बस हार मत मानना

अपनी किसी भी मेहनत, को बेकार मत मानना।
मंजिल तुम्हे जरूर मिलेगी, बस हार मत मानना।।

अगर असफल हो जाय, तो कारण को जानना।
सफलता जरूर मिलेगी, बस हार मत मानना।।

राह में मुश्किलें बहुत हैं, पर हिम्मत नहीं हारना।
हर ख्वाब तेरा पूरा होगा, बस हार मत मानना।।

मन मे थोड़ा धैर्य रखना, पूर्ण होगी तेरी मनोकामना।
हर चीज तुझे मिलेगी, बस हार मत मानना।।

जीवन मे कोई चीज चाहिए, तो उसे बुरी तरह चाहना।
लक्ष्य तुझे जरूर मिलेगा, बस हार मत मानना।।

श्याम सुंदर साहू

सफल जीवन

एक बेटे ने पिता से पूछा पापा ! ये 'सफल जीवन' क्या होता है ?

पिता ... बेटे को पतंग उड़ाने ले गए. बेटा .. पिता को .. -----
ध्यान से पतंग उड़ाते देख रहा था.

थोड़ी देर बाद बेटा बोला पापा ! ये धागे की वजह से ...
पतंग और ऊपर नहीं जा पा रही है. क्या हम इसे तोड़ दें ?
ये और ऊपर चली जाएगी.

पिता ने धागा तोड़ दिया. पतंग थोड़ा सा और ऊपर गई.
उसके बाद लहरा कर नीचे आयी ... ... और दूर ...
अनजान जगह पर जाकर गिर गई.

तब पिता ने बेटे को ... जीवन का दर्शन समझाया.
बेटा ! जिंदगी में हम ... जिस ऊँचाई पर हैं,
हमें अक्सर लगता है कि कुछ चीजें .. जिनसे हम बंधे हैं,
वे हमें और ऊपर जाने से ... रोक रही हैं.

जैसे - घर, परिवार, अनुशासन माता-पिता, गुरू और समाज.
और हम उनसे आजाद होना चाहते हैं.

यही वो धागे होते हैं, जो हमें उस ऊँचाई पर ... बना कर रखते हैं.

इन धागों के बिना ... हम एक बार तो ऊपर जायेंगे, परन्तु
बाद में हमारा वही हश्र होगा जो बिन धागे की पतंग का हुआ.

अतः जीवन में यदि तुम ऊँचाइयों पर बने रहना चाहते हो,
तो ... कभी भी इन धागों से रिश्ता मत तोड़ना.

धागे और पतंग जैसे जुड़ाव के सफल संतुलन से मिली हुई
ऊँचाई को ही 'सफल जीवन' कहते हैं.

राजेन्द्र जायसवाल (सूरजपुर)

क्या करु, क्या करु ?

पिन्टि ने कहा मींटि से

गर्मियों मे मैं क्या करु

भई क्या करु...

परीक्षा हुई, और पढाई भी पूरी हुई

स्कूल हुआ और शिक्षको की बात भी पूरी हुई..

होमवर्क क्लासवर्क सब हुआ

और कॉपी भी पूरी हुई..

अब तुम्ही बताओ अए सखी

मै क्या करु भई क्या करु..

मिन्टि ने कहा पिंटि से

ये अवसर मिला है तैयारी का

बस आगे बढ़ने की तैयारी का

रचना करो और चित्र बनाओ

कहानी पढ़ो और सबको सुनाओ

बस तैयारी तुम करती जाओ

ये अवसर मिला है तैयारी का

अये सखी इन छुट्टियों मे

तुम ये करो भई ये करो..

एस. आर. क़ुरैशी (व्याख्याता)
शा. कन्या उ मा वि. मगरलोड जिला - धमतरी

हँसता हुआ गुलाब

हँसता हुआ गुलाब दिखा ,

खुशियों वाला ख्वाब दिखा ,

तितली के हर सवाल का ,

प्यारा एक जवाब दिखा ।

अपनी महक लुटाता है ,

सबका मन भरमाता है ,

अपनी सुंदरता से वो ,

सबको मीत बनाता है।

वो बगिया की शान सखे ,

लेकिन कुछ शैतान सखे ,

उसे तोड़ने जो आता ,

शूल चुभाता उसे सखे ।

महेंद्र कुमार वर्मा

खुशियों की है रेल

प्यारा बन्दर कर रहा,
उछल कूद का खेल,

मेले का उत्साह है ,
खुशियों की है रेल ,

खुशियों की है रेल ,
दिख रहे प्यारे दोसे ,

मस्ती की है चाट ,
कचौड़ी और समोसे,

हाथी भालू शेर,
देखते अजब नजारा,

कोयल गाती खूब ,
झूमता बन्दर प्यारा ।

महेंद्र कुमार वर्मा

रंग रंगीले जानवर

मैं हूं हाथी मतवाला,जंगलों में घूमा करता हूं|

लंबी सूट कान बड़े-बड़े,सब की बातें सुन लेता हूं।|

मैं हूं बंदर चटक मटक,पेड़ों पर झूला करता हूं|

आड़े टेढ़े मुंह बनाकर,बच्चों को हंसाता रहता हूं।|

मैं मछली जल की रानी,जल में विचरण करती हूं |

जो छुओ तुम पानी को तो,झट से चुप मै जाती ।|

मैं कोयल काली हूं,कुकू गति रहती हूं|

आवाज को जब सुनते हैं मेरी,मतवाले हो जाते हैं सब।|

मैं लोमड़ी चालाक बड़ी हूं,छोड़ती नहीं कोई मौका हूं |

जहां भोजन दिख जाए तो,चालाकी से पकड़ लेती हूं।|

मैं हूं जंगल का राजा शेर,समझदारी में करता नहीं देर |

डरते हैं सब लोग मुझसे,दहाड़ू जब मैं जोर जोर से। |

श्रीमती रेणुका अग्रवाल बेमेतरा

क छोटा सा खेले खेल

चलो अंको से करें मेल,जोड़ घटाना सीखो यार|

गुना भाग से कर लो प्यार,सांप सीढ़ी के खेल के जैसे |

बढ़ते घटते क्रम में चढ़ते ऊपर नीचे,छोटे से बड़ा ,बड़े से छोटा|

सिखा हमने आरोही अवरोही का लेखा-जोखा|

दो एकम दो दो दूनी चार है बोलो | पहाड़ा को तुम दिमाग में घोलो |

अब आकारों से दुनिया देखो | कही त्रिभुज कही चतुर्भुज को ढूंढो |

थक जाओ जो गोल घूमकर| पैसों को गिनो झूम झूम कर |

चलो फिर से खेलते है खेल | गणित की पकड़ले रेल |

श्रीमती रेणुका अग्रवाल बेमेतरा

बसंत ऋतु आई खुशियां लाई

देखो - देखो बसंत ऋतु है आई , साथ - साथ प्राकृति में खुशियां लाई ।

घर - घर में है हरियाली आई , हर जुबा पे भी अब बसंत छाई ।

अब तो सब का मन ही खिल जाए , मस्ती - मस्ती में भी गीत गाए ।

खेतो में भी हरियाली छाई, किसानों के भी मन में खुशियां आई ।

धरती हमारी माता है , पृथ्वी हमारी जन्मदाता है ।

इनसे जुड़ा है , सारे जग का नाता ।

भू , भूमि , धरा, धरती, तेरे है कितने नाम ।

तू है रंग - बिरंगे रंगो वाली, हमारी धरती माता ।

तू ही है हमारी मां , रखती हमारा कितना ध्यान है ।

तेरी ही गोद में पले जग सारा, हर प्राणी की जान है तू ।

तुझमें ही जीव - जंतु , हवा , आग , पानी,

जिन्होंने मिलकर बनाया इस जग को सबसे प्यारी ।

मगर अब आने वाले वक्त के साथ बदल रहा मानव ,

बन रहा है अब वो प्रकृति दानव ।

गरिमा बरेठ, कक्षा – आठवीं, जांजगीर चांपा

कुछ करके दिखाओगे

यह पढ़ाई चलती रहती है पीढ़ी-दर-पीढ़ी।

पढ़ पुस्तक को बनाकर कामयाबी की सीढ़ी।।

सब जा रहे चाँद पर, तू सूर्य पर जाकर दिखलाएगा।

अपना सपना पूरा कर, तू कुछ करके दिखलाएगा।।

सब निकाल रहे डीजल, पेट्रोल, पानी, जमीन से,

तुझे हवा से बनानी है, तुझे कुछ करके दिखलाना है।।

तुझे अपने सपनों के सोपानों को तय करना है।

बन नया भीमराव, संविधान तुझे गढ़ना है।।

छुआछूत तो उसने मिटाया, तुझे कुछ नया करना है।

बन कलयुग का राजा, नया इतिहास तुझे बनाना है।।

कोई दे रहे कई संदेश, तुझे पुस्तक नयी देनी है।

सब ज्ञानी के बीच में, तुझे ज्ञान का चर्चा करनी है।।

बाप रहा अनपढ़ लेकिन, तुझे पढ़ाया-लिखाया है।

लड़की के चक्कर में न रहना, भरोसा तुझ पर जताया है।।

सब उड़ते हैं हौसलों की उड़ान, पर तू मंजिल पे उड़।

पढ़कर आगे बढ़ और नए दोस्तों से जुड़।

चल तू कदम-से-कदम मिलाते, जीत जिद्द पर अड़ी।

मेहनत कर कामयाबी मिलेगी, तेरे घर के आगे खड़ी।

यशवंत पात्रे कक्षा आठवीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा
वि.खं लोरमी, जिला-मुंगेली छत्तीसगढ़।

नवसंवत नववर्ष

नव विक्रमसंवत्सर का दिन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को आता।

ग्रहों की उदय - अस्त की स्थिति सूर्य - चंद्र के ग्रहण बताता।

कालगणना अनुकूल देश के मंगल कार्य, मुहूर्त सँवारे।

रहते हैं पंचांग आश्रित व्रत. पूजा, त्योहार हमारे।

सृजित किया राष्ट्रीय कैलेंडर प्रोफेसर मेघनाथ जी साहा।

नवसंवत्सर है वैज्ञानिक वासंती ऋतु कहती आहा।

भारतीय संस्कृति से पोषित नवसंवत, नववर्ष मनाएँ ।

शुभकामना, बधाई देकर नव उमंग में, मंगल गाएँ।

गौरीशंकर वैश्य विनम्र
117 आदिलनगर, विकासनगर

आया बंदर

मेरे छत पर आया बंदर,

रोटी लेकर भागा बंदर ।

बैठ पेड़ पर खाया बंदर,

सबको खूब चिढ़ाया बंदर ।

खीं- खीं दाँत दिखाया बंदर,

डाली बहुत झुलाया बंदर ।

रसभरे फल गिराया बंदर,

सबको खूब खिलाया बंदर ।

- डॉ. सतीश चन्द्र भगत

कलम की ताकत

आग को बुझाने में पानी काम आता है। पढ़ाई में कलम तकदीर बनाती है।।

इसे हाथ में पकड़ो तो लगे जादू की छड़ी। इसे पाने के लिए मैंने की मेहनत कड़ी।।

चेक बनाए हजारों के, नाम लिखना है इसका काम।

एक मिनट में जिंदगी बदल दे, फिर भी ना करे ये आराम।।

कुछ की तकदीर बिगाड़ी, तो कुछ की तकदीर बनाई है।

यह है कलम इसे पाने के लिए कई तरीके अपनाए हैं।।

पढ़ कर कलम जेब में रखना गर्व की बात है,

आन-बान-शान यही कलम की पहचान है।

यही कलम की कयामत है, यही कलम की ताकत है।।

यशवंत पात्रे

बेटी हूं

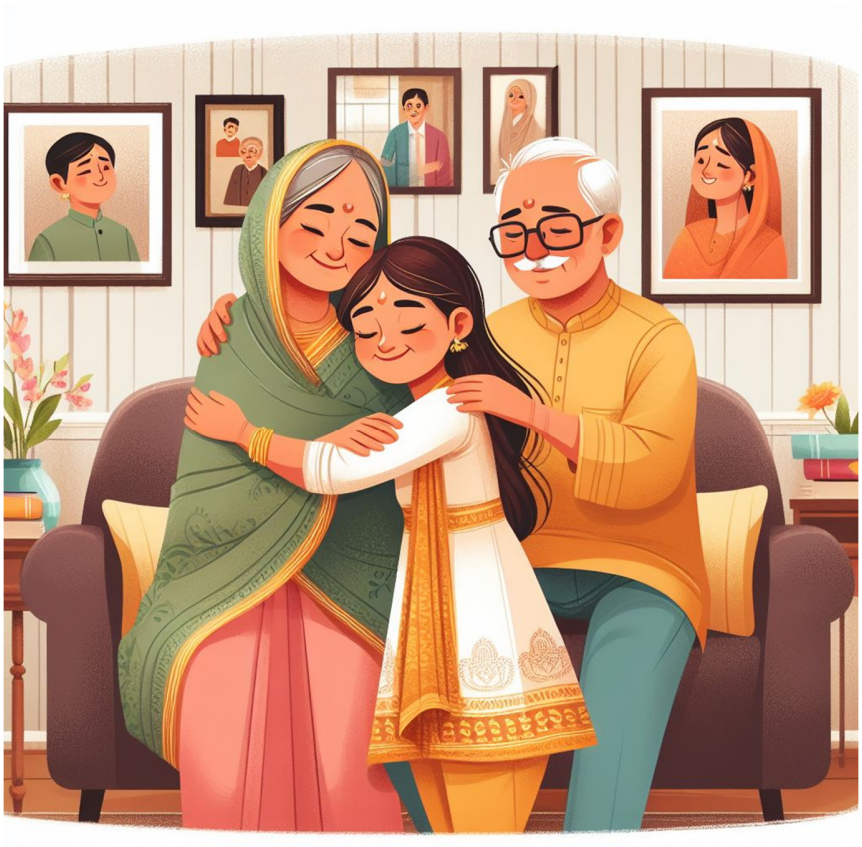

बेटी हूं, खुश हूं बेटी हूं, दुखी हूं। खुद के अस्तित्व को पा रही हूं।

खुश हूँ दुनिया के दूषण के कारण | मां-बाप को होने वाली चिंता से।

बेटी हूं, इसलिए दुखी हूं। मां के स्नेह के साथ और,

पिता के अटूट विश्वास के साथ, स्वप्न को साकार कर रही हूं,

बेटी हूं, इसलिए खुश हूं। अनेक अवरोध और मर्यादा होने से,

बेटी के व्यक्तित्व के साथ, मम्मी-पापा के प्यार को पा रही हूं,

बेटी हूं, खुश हूं। अंत में प्रकृति की अद्भुत रचना हूं

बेटी हूं, खुश हूं। बेटी हूं, खुश हूं।

वीरेंद्र बहादुर सिंह

बच्चों की मुस्कान हँसता हुआ गुलाब

हँसता हुआ गुलाब दिखा ,

खुशियों वाला ख्वाब दिखा ,

तितली के हर सवाल का ,

प्यारा एक जवाब दिखा ।

अपनी महक लुटाता है ,

सबका मन भरमाता है ,

अपनी सुंदरता से वो ,

सबको मीत बनाता है।

वो बगिया की शान सखे ,

लेकिन कुछ शैतान सखे ,

उसे तोड़ने जो आता ,

शूल चुभाता उसे सखे ।

महेंद्र कुमार वर्मा

किरणें

सूरज की किरणें खिल जाये। फूलों की महक सबको भाये।।

चिड़िया मधुर तान सुनाये। सबके दिल को नित्य लुभाये ।।

बचपन यादें बड़ा सुहाना। खुशियों की भी राह सजाना।।

सारी चीजें पास बुलाती। ऐसी दुनियाँ हमें सुहाती ।।

रूठा रूठी ढंग निराले। हँसते गाते है मतवाले।।

इनकी प्यारी तुतली बातें। मानो प्रभु की हैं सौगातें।।

बच्चों का संसार, खुशियों का द्वार, खेल-खिलौने, मिठाईयों से प्यार।

बच्चों की मुस्कान, बड़ों का प्यार, इसके बिना जीवन लगता है बेजार।।

सुन्दर लाल डडसेना

क सिपाही

लिए तिरंगा एक सिपाही, सरहद पार खड़ा है ।
अंगद जैसे पैर जमाए, अविरल अटल अड़ा है ।।
सीमाओं पर घात लगाए, दुश्मन झाँक रहें हैं ।
एक अकेला कौन खड़ा है, उनको आँक रहें हैं ।
हम तो सौ की संख्या में हैं, क्या ये लड़ पाएगा ।
खाकर गोली एक हमारे, यह तो मर जाएगा ।
टूट पड़ो रे इस पर सारे, गीदड़ मौन पड़ा है ।।
लिए तिरंगा एक सिपाही, सरहद पार खड़ा है ,,,,
कौन मौन है कौन अकेला, किसको गीदड़ बोले ।
गरज उठा वह एक सिपाही, धरती डगमग डोले ।
भेदूंगा मैं सबका सीना, शेर दहाड़ रहा है ।
आतंकी को रौंद धरा पर, उसे पछाड़ रहा है ।
क्रूर तुम्हारे तुच्छ नियत से, मेरा फर्ज बड़ा है ।।
लिए तिरंगा एक सिपाही, सरहद पार खड़ा है ,,,,
मैं भारत का एक सिपाही, सौ रिपु पर भारी हूँ ।
शिव भोले का तांडव हूँ मैं, सांपट दोधारी हूँ ।
हिला सके नहिंँ आंँधी मुझको, कँपा सके नहिंँ पाला ।
कफन तिरंगा ओढ़ूंगा मैं, भारत भू का रखवाला ।
निकल पड़ा हूँ सेवा पथ पर, जिस पर ध्वजा गड़ा है ।।
लिए तिरंगा एक सिपाही, सरहद पार खड़ा है ।
अंगद जैसे पैर जमाए, अविरल अटल अड़ा है ।।

डॉ. पदमा साहू

होली

रंगों की बौछार है होली। प्यार का त्योहार है होली।।
हरा, बैंगनी, पीला, नीला, लाल, गुलाबी रंग-रंगीला,
इंद्रधनुषी रंगों को लेकर, आती हर बार है होली।
हाथों में लेकर पिचकारी, इक-दूजे पर कस-कस मारी,
जन-मन और तन के सारे, कम करता तकरार है होली।
सब आपस में भरकर कोली, हँसी-खुशी से खेलें होली,
हरे, लाल, नीले और पीले, रंगों से सरोबार है होली।
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, सबको रंगों से रंगने आई,
प्रेम रंग होली न्यारा, प्यार का खुम्मार है होली।
नफरत को जलाने आई, सबको गले लगाने आई,
गीत प्रीत के गाने को, रंगों की बौछार है होली।
आओ ऐसी अलख जगाएं, बुरी रीत रिवाज जलाएं,
मानवता सन्देश सुनाने, आती बारम्बार है होली।

भूपसिंह 'भारती' बल्ड़ोदिया भवन,
आदर्श नगर नारनौल, हरियाणा।

गिनती कुछ ऐसे सीखें

शुरुआत होती है एक.., सदा काम करो तुम नेक।

एक के बाद आता दो.., क्रोध, अहं तुम त्याग दो।

दो के आगे है तीन., मत समझना खुद को हीन।

तीन आगे है चार., शिक्षित बनना है जीवन का सार।

चार के बाद आये पाँच., अपनी कमियों की करो जाँच ।

पाँच आगे है छः, बनो तुम विवेकानंद की तरह।

छः आगे है सात., कीजिए मीठी - मीठी बात,

सात आगे है आठ, याद करो अपना पाठ।

आठ आगे है नौ., जलाओ विश्वास की लौ।

नौ आगे है दस., दुख सहकर नित हँस ।

दस आगे है ग्यारह.., बड़ों की मानो सलाह।

ग्यारह आगे है बारह... दुर्गुणों को दो न पनाह।

बारह आगे है तेरह.., जीना तुम निडर की तरह।

तेरह आगे है चौदह.., मत करना कोई गुनाह।

चौदह आगे है पंद्रह... अन्याय का करना विद्रोह।

पंद्रह आगे है सोलह.., दीन दुखियों की करो परवाह।

सोलह आगे है सत्रह, मन में रहे सदैव उत्साह ।

सत्रह आगे है अठारह.., पीड़ितों की सुनो कराह |

अठारह आगे है उन्नीस.., शीश नवाकर लो आशीष।

उन्नीस आगे है बीस.., महापुरुषों से लेना तुम सीख।

डॉ. सुकमोती चौहान, रुचि

मत दिखाना

आओ प्यार से होली खेले,

वाणी में मीठे रस हम घोले,

तरह-तरह के रंग लगाकर,

एक दिन मिट्टी में मिल जाना,

घर से निकलो होली खेलो,

समय मत गॅवाना,

आओ हम तुम होली खेले,

सबको प्रेम के रंग में डूबा ले,

ऐसा होली मनाना ।

संतोष कुमार कर्ष

कोरबा

जंगल में होली

एकबार जंगल के अंदर, जानवरों से बोला बंदर।

आया होली का त्योहार, मिलजुल चलो, मनाएँ यार।

सभी रहेंगे नशे से दूर, बस हुड़दंग मचे भरपूर।

सबको लगी योजना प्यारी, दौड़ - दौड़ कर ली तैयारी।

जेब्रा ले आया पिचकारी, रंग भरी चीते को मारी।

भालू नाचे, करे धमाल, दादा शेर के मला गुलाल।

सूंड़ में पानी लाया हाथी, बौछारों से भीगे साथी।

गीदड़ पानी से घबराया, पकड़ गधे ने उसे घुमाया।

हिरण वहाँ से लगा सटकने, बंदर मामा लगे डपटने।

झाड़ी में दुबका खरगोश, चढ़ा लोमड़ी को था जोश।

बाहर आओ, मेरे लाल, रंग से भिगो दिया तत्काल।

सभी को आया अति आनंद, प्रेम से रहना है स्वच्छंद।

बोल रहे सब अपनी बोली, यादगार बन गई है होली।

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र

वृद्धाश्रम

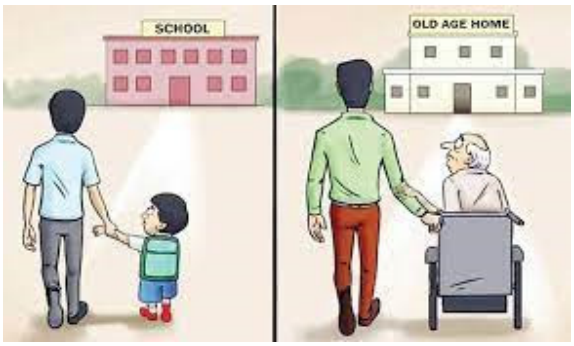

उंगली पड़कर जिस माँ बाप ने ,हमें चलना सिखाया।
उसे वृद्धाश्रम छोड़ते समय, तुम्हें तनिक शर्म भी ना आया।।
भूल गए वह बचपन जब वो रोटी खिलाती थी, गोदी में बिठाकर दूध भी पिलाती थी।
तुम भूखा ना सो जाओ,सोचकर दिन रात कमाती थी।।
कोई अरे भी तुमको कहता, तो खूब चिल्लाती थी
मेरा बेटा मेरा बेटा कहकर, पूरे गांव वालों से लड़ जाती थी।।
उस मां-बाप पर तुमको, तनिक दया भी ना आई ।
वृद्धावस्था में छोड़ने से पहले, हाथ पैर क्यों नहीं कपकपाई।।
हे ऊपर वाले किसी को, ये दिन ना दिखाना।
वृद्ध आश्रम की चौखट से पहले, अपने दर पर बुलाना।।

श्रीमती नंदिनी राजपूत

परिश्रम से मिलेगी सफलता

लगातार परिश्रम करो, खून में खलबली मचेगी।

दिन-रात को एक करो, सफलता खुद अपने आप मिलेगी।।

दौड़ नहीं सकते तो क्या हुआ? चल तो सकते हैं।

हम कभी रूकने वाले नहीं? मंजिल को प्राप्त करने वाले हैं।।

बीती हुई बातें याद आती है। हमको बहुत सताती है।।

हम तो खोये रहते हैं, परिश्रम के रात में।

लग जायेंगे लक्ष्य को पूरा करने में, सफलता के आस में।।

जब परीक्षा आ गई। जोश, उमंग और खुशी में शाम ढलेगी।

लग जायेंगे परिश्रम करने में, रिजल्ट में प्रथम स्थान मिलेगी।।

आदित्य बघेल

मातृ पितृ छाया

पिता हैं उम्मीद पिता हैं शान
पिता से है हमारी पहचान,
आंच न कोई आने देते
आगे बढ़कर हमें बचाते !

मेहनत करते हमपर लुटाते
खुद के लिए न एक पैसा बचाये !
दिन भर घर से बाहर रहते
बच्चो की मुस्कान देख सब दर्द भूल जाते

माँ है त्याग तो पिता है छाया
इनके प्रेम को कोई माप न पाया
नहीं दिखावा प्रेम मे इनके
माँ पिता के ऋण है हम पे !

न देना दुख इनको न कभी दिल दुखाना
भूल कर भी न कभी इन्हे रुलाना....
बना रहे आशीष पिता का
मिलता रहें स्नेह माँ का,

जीवन उसका सफल हों पाया
जिसपर रहें मातृ पितृ छाया।

रेखा रॉय प्रधानपाठक
शा. प्राथमिक शाला गांधीनगर, अंबिकापुर सरगुजा (छ. ग.)

माँ का दुलार

सच्ची हैं माँ सच्चा हैं प्यार, सबसे न्यारा माँ का दुलार।

एक हो या संतान दोचार, प्यार लुटाती सबपर एकसार।

सच्ची हैं माँ हैं सच्चा प्यार, सबसे न्यारा माँ का दुलार ।

गोद मे बैठाती नींद तक गवाती, सबसे पहले बच्चो को खिलाती ।

सच्ची है माँ सच्चा है प्यार, सबसे न्यारा माँ का दुलार ।

प्यार लुटाती, दुख हैं छुपाती, भूख,प्यास,नींद तक हारी ।

कितनी सच्ची कितनी प्यारी , निश्छल, निशुल्क माँ का प्यार ।

निस्वार्थ भाव से देती जीवन सवार, कितने ही वों त्याग हैं करती ।

जीवन देती हम पर वार, नमन हैं उस माँ को बारबार ।

सच्ची हैं माँ सच्चा हैं प्यार, सबसे न्यारा माँ का दुलार ।

रेखा रॉय प्रधानपाठक

शा. प्राथमिक शाला गांधीनगर, अंबिकापुर सरगुजा (छ. ग.)

मच्छर दादा

मच्छर दादा बंद करो तुम, अपनी तानाशाही।
गर्मी में बने फिरे थे तुम चारों तरफ सिपाही।
खून पिया है सबका तुमने, लगा के इंजेक्शन।
कोरोना काल में था दिया, नया तुम्हीं ने टेंशन।
रोग बांटते फिरते हो तुम, शर्म नहीं क्या आई।
मच्छर दादा बंद करो तुम, अपनी तानाशाही।
अब शांत करो भुनभुन अपनी, मौसम अब है ठंडा।
अधिक इतराए तो पड़ेगा, सर्दी वाला डंडा।
घुस जाओ गंदी नाली में, सुई चुभाना छोड़ो।
जुकाम लग जाएगा वरना, पंख अपने सिकोड़ो।
शीतलहर बन दुश्मन तेरी, ले रही अंगड़ाई।
मच्छर दादा बंद करो तुम, अपनी तानाशाही।

गोविन्द भारद्वाज
पितृकृपा, बी-ब्लॉक हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी पंचशील अजमेर राजस्थान

किताबें

मेरी अच्छी मित्र —किताबें
सीधी-सच्ची मित्र किताबें।
कुछ छोटी कुछ मोटी-मोटी,
सार्थक और सचित्र किताबें।

कृषि, खेल विज्ञान की बातें
जल थल आसमान की बातें।
अंतरिक्ष-अभियान की बातें
कितनी चित्र-विचित्र किताबें।

बुरा-भला का ज्ञान करातीं
धर्म और ईमान सिखातीं।
मानवता का पाठ पढ़ातीं
गढ़ती सहज चरित्र किताबें।

जितना समय इन्हें हम देंगे
उतना ज्यादा ही सीखेंगे।
इनका आदर करना सीखें
पावन परम पवित्र किताबें।

राजेन्द्र श्रीवास्तव, विदिशा

गर्मी आई

दौड़ लगाती आई गर्मी, शोर मचाती आई गर्मी।
सुबह - सवेरे देखो सारे, ताप बढ़ाती आई गर्मी।

सूरज दादा बरसाते हैं, अब तो देखो अंगारे जी।
सूखी -सूखी धरती लगती, सूखे पोखर अब सारे जी।

नाच नचाते आई गर्मी, स्वांग रचाती आई गर्मी।
सुबह - सवेरे देखो सारे, ताप बढ़ाती आई गर्मी।

तन से बहते खूब पसीने, लू भी चलती आग उगलती।
दोपहरी के सन्नाटों में तो, नन्ही चिड़िया खूब उछलती।

छाँव चुराती आई गर्मी, आँख दिखाती आई गर्मी।
सुबह - सवेरे देखो सारे, ताप बढ़ाती आई गर्मी।

चाल हुई नदियों की धीरे, भूल गये झरना भी झरने।
हरी-भरी शाखों की अब तो, फूल - पत्तियाँ लगती झड़ने।
नाक चढ़ाती आई गर्मी, आग लगाती आई गर्मी।

गोविन्द भारद्वाज

भारत की बेटी

भारत की बेटी लिखे आसमानों में, ओ बसे हृदय अरमानों में.

ओ चले भू- धरा पर, हरियाली बन खेत खलिहानों में.

भारत की बेटी उड़े गगन- पवन में, . मुखरित कर चंद्र कर्णों में.

ओ हँसी मुख- मण्डल सितारों जैसी, ओ बसी मधुर मुस्कानों में.

प्यारी बेटी समुद्र तल में बैठ, दमके हीरा- मोती बन खदानों में.

आओ करें बेटी को स्नेह-दुलार, वह प्यारी सारे जहाँनों में,

सारे जहाँनों में.

श्रीमती संगीता निर्मलकर

बैलून कार

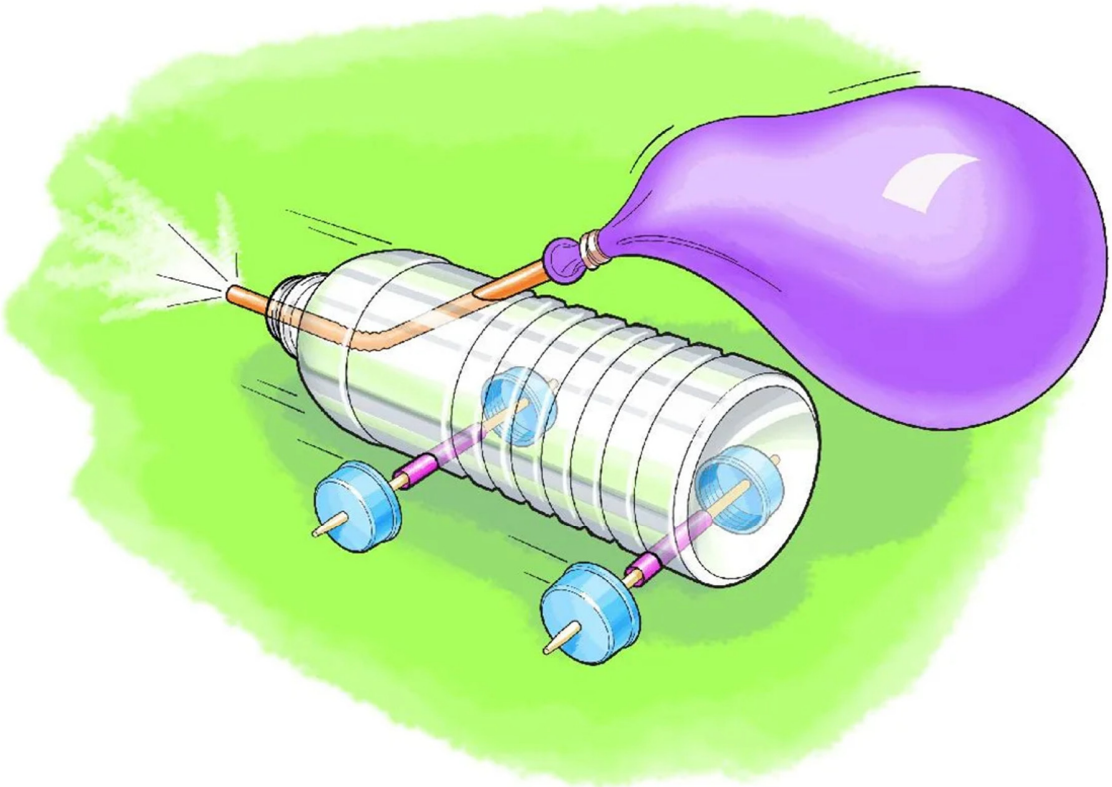

आओ सीखें बैलून कार , खड्डे ले लो तुम दो चार।

उनको काटो आयताकार , चक्के लगा दो उसमें चार।

अब तुम देखो गजब कमाल, तैयार हो गई तुम्हारी कार।

फिर ले लो एक स्ट्रॉ पाइप, उसमें बांधों बलून टाइट।

स्ट्रॉ चिपका दो कार पर, बैलून फुलाओ सांस भर।

देखो कैसे भागे सरपट, तुम भी दौड़ो पीछे झटपट।

वर्षा जैन शास. प्राथमिक शाला केवतर बेमेतरा

फल खाओ

पीला पीला मीठा केला । झूल रहा है ठेला ठेला ।
केला होता है गुणकारी । खाओ बच्चों बारी - बारी ।।

पीला पीला ताजा ताजा । आम फलों का होता राजा ।।
खट्टा मीठा स्वाद रसीला । स्टावेरी है बहुत लचीला।।

बेर देखके मन ललचाए । मुँह में सबके पानी आए ।।
ताजा ताजा चुनकर लायें । नमक मिर्च में आओ खायें ।।

अमरुद मीठा काजू मीठा । तेंदू मीठा चीकू मीठा ।।
चार चिरौंजी मन को भाए । बच्चें बड़े चाव से खाए ।।

ईना मीना सीमा आओ । लाल सेब तुम मिलकर खाओ ।।
मीनू सोनू गोलू आओ । फल को धोकर ही नित खाओ ।।

डॉ. सुकमोती चौहान

परीक्षा आई

परीक्षा की घड़ी है आयी, हिम्मत तुम न हारना ।

डटकर करना सामना तुम, धीरज मन में धारना ।।

हार जीत जीवन का हिस्सा है, मेहनत करते तुम रहना ।

पर विचलित कभी न होना, लक्ष्य पर अटल रहना।।

मन लगाकर काम तुम करना, फल की इच्छा मत करना ।

सफलता तुम्हारे कदम चूमेगी , हौसला बनाए रखना ।।

परीक्षा की घड़ी है आयी, हिम्मत तुम न हारना ।

आशा उमेश पान्डेय

उगता सूरज

उगता सूरज लगता न्यारा। हुआ नवल सबेर।।

चिड़िया चीं चीं शोर मचाती। जगने की है बेर।।

उठ जाओ अब तुम बच्चें । चलो खेलने खेल।।

छूक छूक करती रेल बनों तुम । फिर देखो डिब्बों का मेल।।

शुद्ध हवा से मिलती सबके। साँसों को है ताजगी।।

फिर श्वासों का रोग है देखों। कैसे डर कर है भगी।।

पढ़ लिखकर जीवन है गढना। चलों चलें स्कूल को।।

समय का महत्व है पहचानों । कभी न करना इस भूल को।।

शुभम पान्डेय भव

काश!

मिल जाते अगर पंख मुझे, जाता मैं भी इधर-उधर।
नीचे से ऊपर उड़ जाता, चंदा-सूरज से मिल पाता।

देख आता बादलों को, तारों के संग दौड़ लगाता।
छिप जाता बादलों में, इंद्रधनुष सा रंग भर पाता।

धरती के साथ दूर चमन में, चिड़ियों के ऊँचे गगन में,
खेलता पकड़म पकड़ाई, बहुत मज़ा आता मेरे भाई।

मन करता जब नीचे आने का, शुरू करता पंख फैलाने।
मिल जाते अगर पंख मुझे, जाता मैं भी इधर-उधर।

श्रीमती आरती साहू पुसौर रायगढ़

व्यंजन वर्णों की शब्द माला

अ से अमली लेके आबो , आ से मीठा आमा खाबो ।
इ से इंजन गर गर चलथे , ईटा से पक्का घर बनथे ।।
उ से दाल उरीद के बनथे , ऊ से ऊटवा घुमत रइथे ।
ए से चिकना एड़ी राखव , ऐ से ऐनक सुंदर देखव ।
ओ से ओम नमः शिवाय , औ से औषधि जान बचाय ।
अं से अंगूर लाबो ताजा, अः से हसके बजाव बाजा।।
क से कलिंदर मीठा लगते, ख से खटिया म सुत भूलाथे ।
ग ले गिल्ली डंडा खेलव , घ ले घंटा जोर बजावव ।
च ले चकरी लईका खेले , छ छतरी बरसात म खोले ।
ज ले जलेबी ताजा लान , झ झउआ कर बुता काम ।
ट टट्टा में सब झन बैठव, ठ ले ठप्पा गोल लगाव ।
ड ले डेना चिरई के जान , ढ ले ढेंकी कुटव धान ।
त तखरी तउल कर ले, थ थरमस शरबत भर ले ।
द ले काटे लाल दतैया, ध ले धनुस चलाव भैया ।
न ले नारियर बिसा के लान, प ले परेवा उड़थे जान।
फ के फुग्गा रंग बिरंगा, ब ले झूम के नाचे बइगा ।
भ के भाटा साग बनाथे, म से मुसुआ बिल म रइथे ।
य से यग्य करे पुजारी, र से रद्दा चल संगवारी ।
ल से लिम्बु बने अचार, व ले वजन कराव यार ।
स संदूक म भरव सामान, ह से हंसिया काटे धान ष से ।

श्रीमती ओकुमारी पटेल
शासकीय प्राथमिक शाला शंकरपाली पुसौर , रायगढ़

बसंत आगे

गांव गली डहर-डहर खुसिहाली छागे।
देखव संगवारी बसंत ऋतु आगे।

होइस हवय येदे सिसिर के अंत।
परसा फूल म आ गे नवा बसंत।

फसल गहूँ के संग चना हरियागे,
सरसों के खेत म फूल ह पिउंरागे।

बागे- बगईचा पूरा हरियागे ।
आमा के रुख तको मऊंर आगे ।

फूल - फूल म बईठत हवय भॅवरा,
डोली -खार म फरगे बटर तिवंरा।

कोईली ह अब डारा म कूहु के लागिस,
बसंत के सिरिस फूल महके लागिस।

जेन पढ़य- लिखय तेकर भाग ह जागे।
बसन्त के बहार ह जिनगी म छागे।

होली तिहार के कर लेवव तियारी।
जुरमिल रंग खेलबोन भरिके पिचकारी ।।

गांव गली डहर-डहर खुसिहाली छागे।
देखव संगवारी बसंत के ऋतु आगे।।

श्रीमती आरती साहू,
प्राथमिक शाला सेमरा, पुसौर, जिला रायगढ़

आगे होली के तिहार

आगे हे होली के तिहार जी।

धरे हे जम्मो रंगे पिचकारी।

करथे दनादन बउछार जी।

आगे हे.....

चुन्दी मुड़ी मा रंग बोथागे

होवत नई हे चिन्हार जी।

आगे हे...

फाग गावत हे बजा के नगाड़ा,

मस्ती में हे नर-नार जी।

आगे हे.....

जीवन चन्द्राकर लाल, MS खपरी, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

खेती-बारी हे हमर किसानी

खेती-बारी हे हमर किसानी, हमर पूंजी हे हमर बियांरा।
अन्नकुमारी के जिहाँ बसेरा, लक्ष्मी दाई के इही हर कोरा।

गाय-गरु अउ बाहन-बईला, इही पूंजी हमर लछमी आए।
घर के कोठा,घर के कोठी, अंगना ल तुलसी सरग बनाए।

नरवा,गरुवा,अउ हमर घुरवा, गाँव-गंवई के अउ गउठान।
इही हमर जिनगी के आधार, इहीच म बसे है हमर परान।

हमर खेती-खारी हमर सेती, हमर मिहनत म चीज उपजे हे।
पर भरोसा म तीन परोसा, अपन बल म धनहा सीरजे हे।

पसीना के पाछु म जिनगी हे, इही म ही जिनगी ह सँवरथे।
ए पसीना हर पावन हावे, जेखर से सोना हर उपजथे।

माटी के सेवा धरती के सेवा, सदा दिन के इही चिन्हारी आए।
इही धरम हमर इही करम हे, पुरखा के इही हर सँगवारी आए।

इही हमर हिरित-पिरित आए, एखरे से हमर पूछ-पुछारी हे।
इही हमर कुल देवी-देवता, इही हर हमर अन्नकुमारी हे।

अशोक पटेल तुस्मा शिवरीनारायण

छत्तीसगढ़ के किसान बेटा

हावँव भले करिया, सब ले बढ़िया अँव रे।
छत्तीसगढ़ के बेटा, छत्तीसगढ़िया अँव रे।।

बड़े बिहिनिया नाँगर धर के, करथौं खेती-किसानी।
दिनभर तन ला अपन तपाथौं, अइसे मोर जिनगानी।
पढ़ें लिखे मा भले अड़हा अँव रे।
छत्तीसगढ़ के बेटा छत्तीसगढ़िया अँव रे।।

धनहा डोली ओलहा भर्री, माटी हावय मटासी।
डबरी खाल्हे रोपा लगाथौं, ऊपर भाँठा ल बियासी।
काम बुता करे मा बने खरतरिहा अँव रे।
छत्तीसगढ़ के बेटा छत्तीसगढ़िया अँव रे।।

आनी बानी के नइ खावौं, मैं हा मेवा मिठाई।
बड़े बिहिनिया अँगरा रोटी, पोथे गा मोर दाई।।
बोरे बासी चटनी के खवइया अँव रे।
छत्तीसगढ़ के बेटा छत्तीसगढ़िया अँव रे।।

राजकुमार निषाद

हमर भाखा छत्तीसगढ़ी

हमर भाखा छत्तीसगढ़ी संगी
सबो भाखा ले हाबे बढ़िया जी।
छोड़ के बिदेसी भाखा ला संगी
अपन भाखा ला अपनावाव जी।।

अपन भाखा म गोठियाय बर संगी
झन मरव तुमन लाज सरम ।
छत्तीसगढ़ के ते हर रहवइया
मिलजुल के करव बने करम।।

साग म सुहाथे अमटहा कढही
एसना भाखा हमर छत्तीसगढ़ी जी।

महतारी भाखा म काम काज करव
विकास के रद्दा तभे गड़ही जी।।

अपन राज म अपन भाखा के
सबो झन करव गुनगान जी।
जतन करव छत्तीसगढ़ी भाखा के
इही भाखा हर हमर पहचान जी।।

प्रीतम कुमार साहू, गुरुजी लिमतरा, धमतरी (छ.ग.)

चिरई चुरगुन

नोनी मनबसिया चिरई बोले रथिया।
देखे जबर आंखी म घुघुवा के लईका।
नोनी मनबसिया चिरई बोले रथिया।।

कऊंआ करे कांव- कांव, अउ दिखे जबर करिया।
कोयली के मीठ बोली, लागे निचट बढ़िया।
नोनी मनबसिया चिरई बोले रथिया।।

टेहों करे टेंव- टेंव, पींउ- पींउ पपीहा।
मियार के पोल सुघ्घर गुरेडिया के खोंधरा।
नोनी मनबसिया चिरई बोले रथिया।।

टें- टें करे मिट्ठू, कूकडू कू कूकरा।
चिरई चहचहाई ह लागे सुघ्घर भईया।
नोनी मनबसिया चिरई बोले रथिया।।

शांति लाल कश्यप

फागुन

मन ल अब्बड़ भावत हे, आये हाबे महीना फागुन।
धीरे -धीरे चलत पुरवईया, हम जम्मो के हरे सगुन।

कप कपावत जाड़ के जाती, गरमी रस्ता बतावत हे।
कोन जनी का जादू डारिस, महुआ घोलो महमावत हे।

किसनहा के मन खिलत, गहुँ के फसल लहलावत हे।
रुख राई चिरई चुरगुन डोले, सरसो के फूल सरसरावत हे।

जाड़ ह कम होवत हे, गरमी धीरे आवत हे।
फागुन म सतरंगी सेना, नवज़वनहा ल हसावत हे।

फसल पके के महीना, किसान के घर अन भरगे।
मस्ती भरे फागुन महीना, रंग ग़ुलाल म लइका उतरगे।

चारो कोती खुशी छागे, सबो के मन ल भागे।
नवा महीना के नवा तरंग, किसान मजदूर के भाग जागे।

जवान लइका म मया आगे, जइसे पानी के बाजे लहरा।
इह महीना के नवा जोस, लागे चंदा अंजोर के पहरा।

फागुन म मिलय सुख, बसंत म भूइंया ह सजे।
भूइंया लागे नव दुलहनियाँ, झानझऱ संग मांदर ढोल बजे।

सरसो पिलहु चुनरी ओढ़े, बहे आमा के बौर गंध।
पलास म तन मन बौराय, हवा घोलो चलय मंद -मंद।

राधेश्याम सिंह बैस, शास प्राथ शाला मगरघटा (नवागढ़) बेमेतरा

भौंरा

गुन गुन करता, भौंरा आया
फुल कलियों मे है मंडराया
मधु मकरंद होठो से लगाया
छुपके फूलों से नेह लगाया।

तितलियाँ-

रंग-बिरंगी तितलियाँ है आयी
फुल-कली के, मन को भायी
है कुछ शर्मिलि कुछ शरमाई
पर !मीठी सी अहसास जगाई।

बाग़-बगीचा-

बाग़-बगीचा भी है, मुस्काया
सौरभता कण-कण में छाया
आम्र तरुवर अब सज आया
ऋतू वसंत का संदेशा आया।

कोकिला-

बहने लगी है शीतल पुरवाई
सौरभता अपने साथ में लाई
कोकिला मीठी कुक है लगाई
जैसे अमराई मे गुंजी शहनाई।

अशोक पटेल, धमतरी (छ ग)

साहित्य सृजन

सरलग लिखत रहिबो हम,
तब कलम मा धार आही।

तब कहूं बन पाबो हम सब,
कलम के बढ़िया सिपाही।।

लिखबो गीत कविता लेख,
कहानी छंद अउ अलंकार।

तब जाके बनबो समाज मा,
एक बड़का साहित्यकार।।

राजकुमार निषाद राज

'आगे रितु बसंत '

आगे रितु बसंत के हवा,
घुरगे पवन म अमरित के दवा,
चारों कोती आनंद मंगल छाये हे,
खेतखार रूखवा राई सब,
फागुन के रंग म नहाये हे ।

कतको रूखवा मन,
जुनना लुगरा ल छोरत हे,
कतको मन तो,
फूले फूल के तिननी मोरत हे ।

कोलिहा, बिघवा मन तो,
बिहाव के टिकिस अभी ले धरे हें,
कोनो ताब बचन,
कोनो शक्ति कपूर बने हें।

चिर ई,चुरगुन सबले बङे नच ईया आय,
कोनो जोककङ ,कोनो परी बने हे,
कोनो पेट फूटत ले खावत हें,
कोनो टाइम बेटाइम मोहरी बजावत हें।

सब अपन अपन तरीका ले,
रितु बसंत के तिहार मनावत हे,
फागुन के,
रंग गुलाल लगावत हें।

आवव अब हमू मन ,
उनखर संग निभाबोन,
अपन प्रकृती, अउ परयावरन ल,
सुग्घर अउ साफ बनाबोन ।
आवव
आवव रितु बसंत के तिहार
मनाबोन ।

छतलाल मणि (गुरूजी), नेवसा (बिलासपुर)

घाम पियास के दिन आगे

घाम पियास म मनखे मरत हे..।।
काटें काबर रुख राई ल संगी,
ताते तात आज हवा चलत हे..!!

बर पिपर के छईयां नंदागे,
बिन छईयां के चिरई भगागे..!!
आगी अंगरा कस भुइयां लागे,
भोंभरा जरई म गोड़ भुंजागे..!!

जंगल झाड़ी रुख राई कटागे,
तरिया डबरी के पानी अटागे..!!
घाम पियास ले सबला बचइया,
हरियर धरती घाम म सुखागे... !!

प्रीतम कुमार साहू शिक्षक, भिलाई, दुर्ग (छ.ग.)

राजिम मेला

ये माघ मा मेला लगे, संगम त्रिवेणी धाम हे।
राजीव लोचन के धरा, अउ संग भांचा राम हे।।
ज्ञानी महात्मा संत मन, आथे इहाँ दर्शन करे।
शिवलिंग मा जल ला चढ़ा,सुख शांति जिनगी मा भरे।।

उमड़य मनुज के भीड़ हा, चारों मुड़ा धुर्रा उड़े।
छल भेद मन ले त्याग के, आगू बढ़य छोटे बड़े।।
सुकवा पहाती लोग सब, ताँता लगावय द्वार मा।
प्रभु ला निहारे मात्र ले, तरथे मनुज संसार मा।।

ये भक्ति के रद्दा हरे, मिटथे हृदय संताप हा।
भगवान के होथे कृपा, धुल जात जम्मों पाप हा।।
स्वागत इहाँ सब के हवै, रम भक्ति के अब रंग मा।
जिनगी हवय बस चार दिन, बाँटव खुशी सब संग मा।।

प्रिया देवांगन प्रियू

पंचतंत्र की कहानी

हाथी और बंदर

एक घने जंगल में एक बंदर और एक हाथी रहते थे। हाथी बड़ा शक्तिशाली था। वो बड़े-बड़े पेड़ों को एक ही झटके में उखाड़ देता था। बंदर काफी दुबला-पतला, लेकिन वो बड़ा ही फुर्तीला और तेज था। दिनभर बंदर जंगल के पेड़ों पर उछलकूद करता रहता था। बंदर और हाथी दोनों को ही अपने गुणों पर बड़ा ही घमंड था। दोनों ही एक-दूसरे से खुद को ज्यादा अच्छा मानते थे। इस वजह से दोनों में हमेशा बहस होती रहती थी। उसी जंगल में एक उल्लू भी रहता था, जो अक्सर बंदर और हाथी की हरकतें देखाता था। वह इन दोनों के लड़ाई-झगड़े से परेशान हो गया था। एक दिन उस उल्लू ने उन दोनों से कहा, 'जिस तरह तुम दोनों लड़ते हो, इससे कोई फैसला नहीं होने वाला है। तुम दोनों एक प्रतियोगिता के जरिए आसानी से यह फैसला कर सकते हो कि तुम दोनों में से सबसे शक्तिशाली कौन है।' बंदर और हाथी दोनों को उल्लू की बात अच्छी लगी। दोनों ने फिर एक साथ पूछा, 'इस प्रतियोगिता में क्या करना होगा?'

उल्लू ने कहा, 'इस जंगल को पार करने पर एक दूसरा जंगल आता है। जहां पर एक काफी पुराना पेड़ है, जिस पर एक सोने का फल लगा हुआ है। तुम दोनों में से उस सोने के फल को जो पहले लाएगा, उसे ही इस प्रतियोगिता का विजेता बनेगा और असल मायनों में सबसे शक्तिशाली कहलाएगा। उल्लू की बात सुनते ही बंदर और हाथी बिना कुछ सोचे-समझे दूसरे जंगल की तरफ निकले। बंदर ने अपनी फुर्ती दिखानी शुरू की। वह एक ही छलांग में एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक पहुंच जाता। वहीं, हाथी तेजी से दौड़ने लगा और रास्ते में आने वाली हर चीज को अपने मजबूत सूंड से उखाड़ फेंकता। थोड़ी ही देर में हाथी और बंदर उस जंगल से बाहर निकल गए। इस जंगल से दूसरे जंगल के बीच के रास्ते में एक नदी बहती थी। उसे पार करने के बाद ही दूसरे जंगल में पहुंचा जा सकता था। बंदर ने फिर से अपनी फुर्ती दिखाई और झट से वह नदी में कूद गया, लेकिन पानी की लहर काफी तेज थी, तो बंदर नदी में बहने लगा। बंदर को नदी में बहते हुए देखरकर हाथी ने तुंरत अपनी सूंड से उसे पकड़कर पानी के बाहर निकाल दिया। हाथी के इस व्यवहार को देखकर बंदर काफी हैरान हुआ। उसने विनम्र होकर हाथी को अपनी जान बचाने के लिए धन्यवाद कहा और अपनी हार मानते हुए हाथी को ही आगे का सफर तय करने के लिए कहा। बंदर की इस बात को सुनकर हाथी ने कहा, 'मैं नदीं पार कर सकता है। तुम भी मेरी पीठ पर बैठकर इसे

पार कर लो।'बंदर हाथी की बात मान गया और वह हाथी के पीठ पर बैठ गया। इस तरह दोनों ने नदी पार कर ली और दूसरे जंगर में पहुंच गए। फिर दोनों ने मिलकर सोने के लगे हुए फल वाले पेड़ को भी खोज निकाला।

सबसे पहले हाथी ने अपनी अपनी सूंड से उस पेड़ को गिराना चाहा, लेकिन वह पेड़ काफी मजबूत था। हाथी के प्रहार से वो पेड़ नहीं उखड़ा।फिर हाथी ने निराश होकर कहा, 'मैं अब यह फल नहीं तोड़ सकता हूं।' बंदर बोला, 'चलो, मैं भी एक बार कोशिश करके देखता हूं।' बंदर फुर्ती से उस पेड़ पर चलने लगा और उस डाली पर पहुंच गया जहां पर सोने का फूल लगा हुआ था। उसने वह फल तोड़ लिया और पेड़ के नीचे उतर गया।

इसके बाद दोनों वापस नदी पार करके अपने जंगल लौट आए और उल्लू को वह सोने का फल दे दिया फल पाने के बाद उल्लू जैसे ही इस प्रतियोगिता के लिए विजेता का नाम बोला, वैसे ही बंदर और हाथी ने मिलकर उसकी बात को रोक दिया।

दोनों ने एक साथ कहा, 'उल्लू दादा, अब हमें विजेता का नाम जानने की आवश्यकता नहीं है। इस प्रतियोगिता को हम दोनों ने मिलकर पूरा किया है। हमें यह समझ में आ गया है कि हर किसी का गुण अपने आप में अलग और खास होता है। हमने यह भी फैसला किया है कि आगे से अब हम कभी भी इस बात पर बहस भी नहीं करेंगे और मित्र की तरह इस जंगल में रहेंगे।'

उल्लू को बंदर और हाथी की बात सुनकर काफी खुशी हुई। उसने दोनों से कहा, 'मैं तुम्हें यही समझाना चाहता था कि सभी एक-दूसरे से अलग होते हैं। अलग-अलग गुण और शक्तियां ही हमें एक दूसरे की मदद करने के काबिल बनाती हैं। साथ ही हर किसी की अपनी कमजोरियां भी होती हैं, इसलिए एक-दूसरे के साथ मिलकर रहना ही सबसे अच्छा होता है।' उसी दिन से हाथी और बंदर दोनों मित्र हो गए और वह जंगल में खुशी-खुशी रहने लगे।

कहानी से सीख : हमें एक-दूसरे के गुणों और शक्तियों का सम्मान करना और आपस में मिल-जुलकर रहना चाहिए।

गिलहरी के पंख

एक प्यारा सा गाँव था गांव का नाम था ढोलकिया इस ढोलकिया गांव में रमौतीन नाम की एक महिला थी जो गांव में मूंगा की सब्जी बेचा करती थी,रमौतीन के घर बहुत बड़ा मूंगा का पेड़ था जिसमे एक गिलहरी इधर उधर फुदकती रहती उसका नाम था चुनचुन चुनचुन की एक भाई और एक बहन थी। जिसकी जिम्मेदारी चुनचुन पर थी चुनचुन बहुत मेहनती थी और उसे मुझेके पत्ते बहुत पसंद थे ,वो अपने भाई बहन को बहुत प्यार से रखती थी और उनके लियी अच्छे अच्छे स्वादिष्ठ भोजन लाया करती थी। उनका खूब ख्याल रखती थी

एक बार जोर से आंधी तूफान आया मूंगा का पेड़ हिलने लगा तभी चुनचुन अतीत की बातों में पुरानी घटना में खो गयी बात उन दिनों की है जब चुनचुन छोटी थी वो अपने मम्मी पापा के साथ मूंगा पेड़ में बसेरा करते थे । एक दिन जुलाई के महीने में, खूब आंधी तूफान बरसात आया इस तुफन्न में चुनचुन सामने वाले जामुन के पेड़ में फस गयी थी और सहमे तुफन्त का सामना कर रही थी रमौतीन के घर जो मूंगा के पेड़ में था वो तूफान में पूरा बिघर मूंगा की डाल टूटने से उसके मम्मी पापा वही दबकर मार गए नन्ही चुनचुन देखते रह गयी तभी से चुनमुन को लगने लगा कि उसके पंख होते तो वह अपने मम्मी पापा को लेकर उड़ जाती और उन्हें बचा लेटी

तभी जोर से आवाज आयी

मूंगा लो मूंगा .....

चुनचुन अतीत के यादों से बाहर आकर बोली

चलो चलो अपना एक पंख बनाये

उड़कर न सही ,सोचकर आगे बढ़ जॉए

कामिनी जोशी, कस्तुरबा ग़ांधी बालिका आवासीय

विद्यालय दुल्लपुर बाजार, कबीरधाम

पंख वाला गधा

एक समय की बात है। एक व्यापारी के पास एक गधा था । वह उस गधे से बहुत काम लेता पर खाने को सिर्फ दो सुखी रोटी देता। गधा आलसी था वह चाहता था खाने को अच्छी अच्छी चीज मिले और काम ना करना पड़े। यह सोचकर गधा एक दिन अपने मालिक को छोड़कर जंगल में आ गया। जंगल में उसे एक बहुत बड़ा पक्षी दिखा। पक्षी मरा हुआ था। गधा उस पक्षी का पँख अपने शरीर में लगा लिया। पँख लगाकर गदा अकड़ कर चलने लगा। चलते चलते उसकी मुलकात जंगल के राजा शेर से हुआ।

शेर गुर्राते हुए कहा कौन हो तुम? पँख वाले गधे ने अकड़ते हुए कहा मैं देव लोक से आरहा हूँ । भगवान इंद्र ने मुझे इस जंगल का राजा बनाकर भेजा है। अब इस जंगल का राजा मैं हूँ । गधे की बात सुनकर शेर भी झुक गया। और अपना राज सिंहासन पँख वाले गधे को दे दिया।

जंगल का राजा बनकर पँख वाला गधा खूब मजे से रहने लगा।बिना काम किए तरह तरह के खाने को मिलने लगा। जंगल के सभी जीव उनकी सेवा में लगा रहता।एक दिन बंदर पंख वाले गधे की पीठ कीमालिश कर रहा था । तभी उनके पंख उखड़ गए और बंदर के हाथ आ गए। बंदर घबरा गए और डरते हुए गधे की तरफ देखा पर गधा सो रहा था। बंदर को कुछ समझ नहीं आया उसने दूसरे पँख को भी खिच कर देखा दूसरा पंख भी उखड़ गया। पर गधा के मुख से आवाज तक नहीं आया और नहीं उनकी नींद खुली।

बंदर समझ गया यह तो आलसी गधा है जो नकली पंख लगाकर जंगल का राजा बन बैठा है। बंदर उस पंख वाले गधे की पुरी सच्चाई जान गया। यह सच्चाई बंदर जंगल के सभी जानवरों को बता दिया। जैसे ही उस पंख वाले गधे की नींद खुली जंगल के सभी जानवर मिलकर उसकी खूब पिटाई गध जंगल छेड़कर भाग निकला।

प्रीतम कुमार साहू, शिक्षक, भिलाई,दुर्ग,(छ.ग.)

मीठी चिड़िया और सैतान बिल्ला

एक चिड़िया थी । उसका नाम मीठी था उसने कुछ दिनों पहले ही छोटे- छोटे प्यारे अंडे दिए थे । वह अपने अंडों का बहुत ख्याल रखती थी उन्हें छोड़कर वह कहीं जाना नहीं चाहती थी । परंतु भोजन की तलाश में उसे घोंसला छोड़कर बाहर निकालना पड़ता था एक दिन वह भोजन की तलाश में अपने घोंसले से बाहर निकली ।

उसने यहां वहां हर गांव और शहर में भोजन ढूंढा । उड़ते उड़ते वह बहुत दूर आ गई और थककर चूर हो गई । परंतु उसे कहीं भी भोजन नहीं मिला । वह बहुत निराश हुई उसे वापस घोंसले में भी लौटना था । वह किसी इंसान के घर पर बिल्कुल नहीं रुकना चाहती थी । इसलिए वह जंगल की ओर जाने का फैसला लेकर फिर से एक लंबी उड़ान भरती है।

कुछ समय बाद वह जंगल पहुंच जाती है और एक पेड़ की टहनी पर बैठकर विश्राम करने की सोचती है । उसे अपने अंडों की बहुत फिक्र हो रही थी । वह अपने आप को सहज करने मधुर आवाज में गीत गाने लगती है -

मीठी हूं मैं और प्यारी भी हूं..

सारी दुनिया से न्यारी भी हूं ।

सबकी प्यारी और दुलारी भी हूं ..

मीठी हूं मैं और प्यारी भी हूं ।

तभी वहां पेड़ के नीचे से एक बिल्ला गुजर रहा होता है वह उसकी आवाज सुनकर उसकी और बढ़ा चला आता है और देखता है कि वह तो एक सुंदर सी चिड़िया है वह मन ही मन लालच से भर जाता है और चिड़िया को खाने की सोचता है , वह चिड़िया के पास जाता है और ललचाई नज़रों से देखते हुए कहता है सुनो प्यारी चिड़िया !

तुम्हारा नाम क्या है ? तुम कहां से आई हो ?

तभी मीठी चिड़िया बोलती है मैं मीठी हूं ।

दूर जंगल से आई हूं । बहुत भूखी हूं। और भोजन की तलाश में यहां वहां भटक रही हूं । परंतु मुझे कहीं भी भोजन नहीं मिला । मैं अपने अंडों को घोंसले में अकेले ही छोड़ कर आ गई हूं । पता नहीं मेरे अंडों का क्या हाल हो रहा होगा । मुझे समझ में नहीं आ रहा है मैं क्या करूं ? मुझे जल्दी वापस लौटना होगा । तभी बिल्ला कहता है चलो मैं तुम्हारी भोजन ढूंढने में तुम्हारी मदद करता हूं । और इस तरह दोनों साथ हो लेते हैं बिल्ला मन ही मन यह सोचकर बहुत प्रसन्न होता है कि आज मैं इस चिड़िया के साथ इसके सारे अंडे भी खा जाऊंगा ।

कुछ ही समय में दोनों घोंसले के पास पहुंच जाते हैं चिड़िया पेड़ पर अपने अंडों के पास घोंसले में जाकर बैठ जाती है और बिल्ला नीचे खड़ा हो सब देखता रहता है । और कहता है मीठी चिड़िया ! क्या मैं तुम्हारे अंडो को देख

सकता हूं मीठी चिड़िया उसके इरादों से बिल्कुल अनजान थी । उसने उसे ऊपर बुला लिया । ऊपर आते ही बिल्ले के तो हाव-भाव ही बदल गए । उसने एक शैतानी मुस्कान के साथ मीठी चिड़िया से कहा तुम कितनी भोली हो , तुमने मुझे यहां बुला कर बहुत बड़ी मुसीबत मोल ली है । अब मैं तुम्हारे सारे अंडों को खाकर अपनी भूख मिटाऊंगा ।

मीठी चिड़िया अचानक बिल्ले के ऐसे तेवर देखकर डर जाती है । परंतु खुद को संभालते हुए होशियारी से काम लेने की सोचते हुए कहती है । आप हमारे मेहमान हैं । आपकी सेवा करना हमारा सौभाग्य होगा । आप मेरे अंडों को खा सकते हैं । परंतु अभी मेरे अंडे बहुत छोटे हैं । इन्हें खाकर तो आपका पेट भी नहीं भरेगा । आप इन्हें अंडों से बाहर आ जाने दीजिए तब यह थोड़े बड़े भी हो जाएंगे फिर आप इन्हें खा लीजिएगा । आपका पेट भी भर जाएगा और मुझे भी आपकी ऐसी मेहमान नवाजी करके बहुत खुशी होगी ।

बिल्ला सोचता है कैसी बेवकूफ चिड़िया है । अपने बच्चों को मुझे खुशी-खुशी खाने को कह रही है । मुझे थोड़ा इंतजार कर लेना चाहिए । जब इन अंडों से बच्चे निकल आएंगे । तब मैं इन्हें खा लूंगा और साथ में इस मीठी चिड़िया को भी खा जाऊंगा । तो फिर ठीक है मैं दोबारा आऊंगा तुम अपने वादे से मुकर मत जाना , यह कह कर चालाक बिल्ला कहां से चला जाता है।

मीठी चिड़िया डरी सहमी अपने बच्चों की देखभाल पहले से भी ज्यादा करने लगती है । और अपने बच्चों के बाहर आने का इंतजार करती है । बिल्ला रोज उन्हें देखने आता , जैसे ही वह आता चिड़िया बोलती अभी अंडों में से बच्चे नहीं निकले हैं आप कल आना । ऐसे ही कई दिन बीत गए और अंडों में से बच्चे बाहर आ गये तभी बिल्ला उन्हें देखने आता है । और नीचे से ही आवाज लगाता है - मीठी चिड़िया ! अंडों में से बच्चे बाहर आ गए क्या ?

मीठी चिड़िया कहती है अभी कुछ दिन और लगेंगे महोदय ! आप कुछ दिन बाद आना । यह सुनकर बिल्ला वहां से चला जाता है । मीठी चिड़िया के बच्चे अब थोड़े बड़े हो चुके थे मीठी चिड़िया अपने बच्चों से कहती है बच्चों अब तुम बड़े हो चुके हो , अब तुम्हें उड़ना सीखना होगा चलो मैं तुम्हें उड़ना सिखाती हूं और वह अपने बच्चों को उड़ना सिखाने लगती है ।

एक दिन बिल्ला वापस उन्हें देखने आता है । और मीठी चिड़िया से कहता है । मीठी चिड़िया तुम्हारे बच्चे अंडों में से बाहर आ गए क्या ? मीठी चिड़िया कहती है हां श्रीमान मेरे बच्चे बाहर आ गए हैं आप कुछ दिनों से आए नहीं । बच्चे तो अब उड़ना भी सीख गए हैं । रुकिए हम आपको उड़कर दिखाते हैं । और वे सभी घोंसले से बाहर आकर उड़ने लगते हैं।

बिल्ला उन्हें देखकर मन ही मन यह सोचकर बहुत खुश हो रहा होता है कि इनको खाकर मेरा पेट तो भर ही जाएगा । मीठी चिड़िया बोलती हैं आप किस सोच में खोये हैं महोदय ! देखिए हम उड़ रहे हैं बिल्ले ने कहा हां हां दिखाओ और मीठी चिड़िया अपने बच्चों के साथ उड़ते उड़ते दूर निकल जाती है । बिल्ला उन्हें अपनी आंखों से ओझल हो जाने तक देखता रहता है । और काफी देर इंतजार करने के बाद भी जब चिड़िया और उसके बच्चे वापस नहीं आते हैं । तब उसे अपने ठगे जाने का एहसास होता है । उसके सारे अरमानों पर पानी फिर जाता है । और वह सिर पीट कर रह जाता है ।

इस तरह चालाक बिल्ले को सबक मिलता है कि कोई भी काम कल पर नहीं छोड़ना चाहिए । यदि मैंने उन्हें पहले ही खा लिया होता तो मुझे आज यह दिन ना देखना पड़ता ।

सबकः- बिना विचार किए किसी पर भी विश्वास नहीं करना चाहिए।

श्रीमती प्रियंका सिंह,
शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला पंपानगर विकासखंड- रामानुजनगर, सूरजपुर

सरगुजिया कहानी

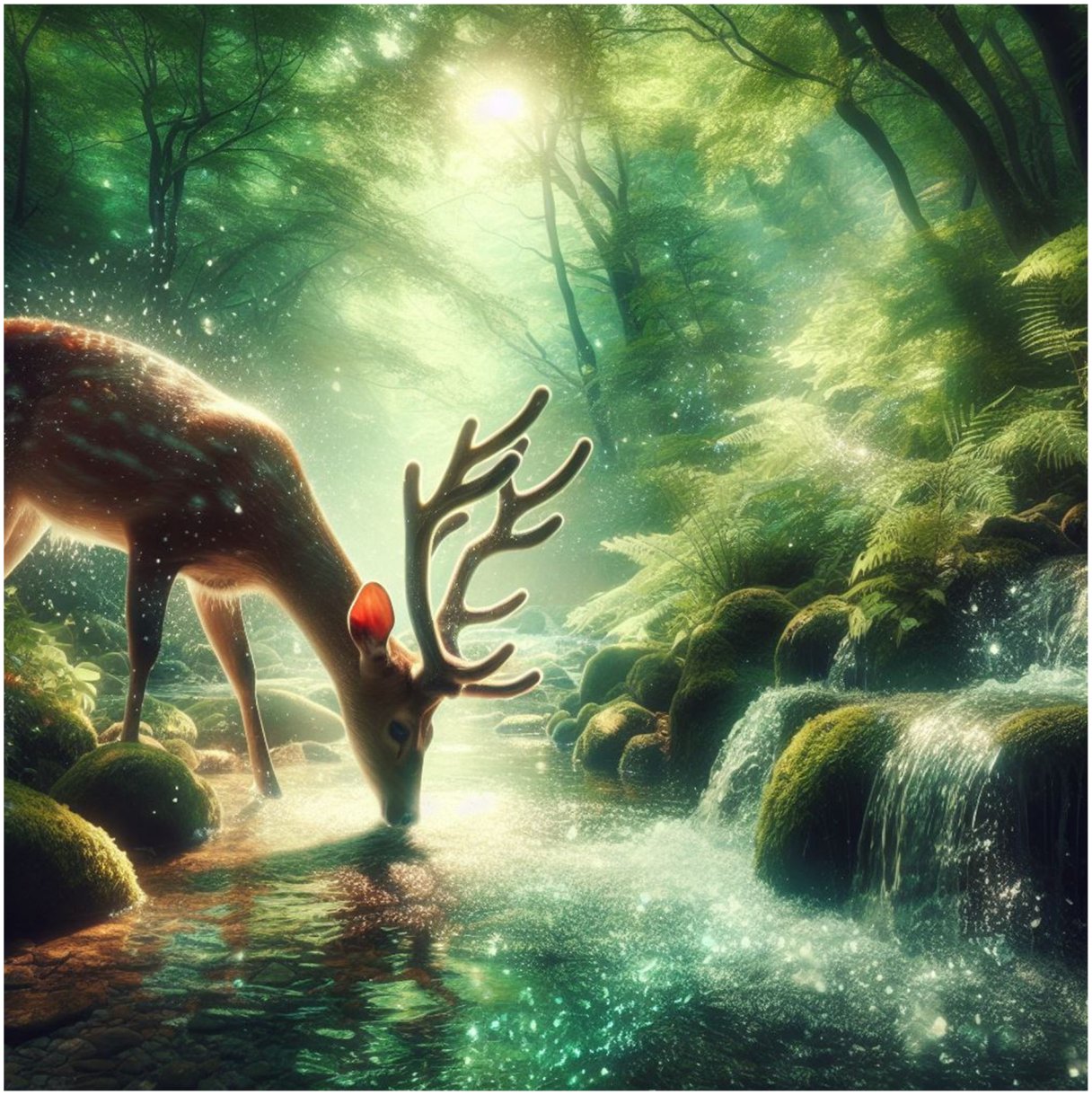

एक जंगल में एक ठन हिरन रहिस। ओही जंगल में एगोट शिकारी रहिस। जंगल में रिकीम - रिकीम कर जानवर अउ चिरई - चुनगुन रहीन । शिकारी हर जब हिरन कर शिकार करे बर गईस ।

हिरन हर पानी ला सुरुब - सुरुब पियत रहीस । सुरुब - सुरुब कर आवाज ला सुनके शिकारी हर ओकरे कति अपन निसाना लगाइस ता ओ हिरन हर जान गईस कि शिकारी हर मोके ला मार के खा जाही । ता वो हिरन हा लुका के ओकर पाछु आके ओला तलवा में ढकोल दिस। अऊ दूर जंगल में भाग गईस । तेकर सुख से जिए लागिस।

कुमारी नीमा दास कक्षा – सातवीं शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला पंपानगर

रामानुजनगर जिला - सूरजपुर (छत्तीसगढ़)

बाल कहानी

श्वेता को पिछले साल की होली याद थी। कभी नहीं भूल सकती उस होली-हुड़दंग को। होली के जस्ट दूसरे दिन बीमार जो पड़ गयी थी। मम्मी-पापा बहुत परेशान हुए थे। हॉस्पिटलाइज़्ड् होना पड़ा था उसे एक हफ्ते के लिए; स्कूल अब्सेंट सो अलग। सो इस बार उसने ठान लिया था कि वह अपनी सहेलियों के साथ रंग-गुलाल खेलने बाहर नहीं जाएगी। तभी हिमांशी, नीलिमा व गीतांजलि को अपने घर की ओर आते देख फट से दरवाजा बंद कर लिया। एक कमरे में चुपचाप बैठ गयी। श्वेता के घर पहुँचते ही नीलिमा ने उसकी मम्मी से पूछा- आंटी जी, श्वेता कहाँ है ? मम्मी मुस्कुराती हुई बोली- अभी ही तो वह बाहर खड़ी थी। तुम सबको आते हुए देखकर अंदर चली गयी। उसे लगाओ न आवाज।

श्वेता ! अरी श्वेता बाहर आओ न। होली खेलेंगे बहन। काहे को दरवाजा बंद की हो ? हिमांशी ने दरवाजे को हिलाते हुए आवाज लगाई।

नहीं.... नहीं....। न बाबा...न...। मुझे नहीं खेलनी है होली। श्वेता की आवाज आई। फिर हिमांशी ने दरवाजे के छेद से अंदर झाँका। बोली– हमें देख कमरे में तू ऐसे घुसी है जैसे चूहा बिल्ली को देख कर बिल में घुस जाता है। चलो, बाहर आओ। डरपोक कहीं की। सभी जोर–जोर से हँसने लगे।

श्वेता की मम्मी बोली- अरे बिटिया !बाहर तो आओ पहले। सबसे गले मिलो। अच्छा लगेगा। देखो तो, ये सभी इतनी दूर से तुझसे मिलने आई हैं। ये लड़की भी न बड़ी अजीब है।

श्वेता अपनी मम्मी की बातें सुन कर भी चुप थी। दरवाजे को खोलने का नाम नहीं ले रही थी। होली का नाम लेते ही श्वेता अंदर से काँप जाती थी। उसे होली से नफरत सी हो गयी थी। बोली- एक शर्त में दरवाजा खुलेगा।

ठीक है। बताओ तुम्हारी शर्त। सभी एक-दूसरे की ओर देखने लगीं।

यही कि तुम लोग मुझे रंग नहीं लगाओगी। श्वेता फट से बोली।

गीतांजलि बोली- ठीक है बाबा ! हम लोग तो तुम्हारे लिए फूलों की पंखुड़ियाँ लेकर आये हैं। इनसे ही होली खेलेंगे तुम्हारे साथ। अब तो खोलो। सबकी मस्ती भरी बातें होने लगी।

जैसे ही श्वेता ने दरवाजा खोला, सभी सहेलियाँ उस पर टूट पड़ीं। लगा कि बरसों बाद मुलाकात हुई हो।

श्वेता अचरज भरी निगाहों से बोली– अरे यार ! सच, तुम लोग भी न ! मैं तो एकदम से डर गई थी तुम्हारे इन मुखौटों, नकली बाल, लाल–पीले हाथ को देखकर। कहीं ये फिर मेरे चेहरे पर रंग न लगा दें, जिससे गोल–गोल इलायची के दाने न उभर आये चेहरे पर। याद है न, पिछले बार की होली.... मैं कैसे...? खैर छोड़ो।

कुछ देर शांत रहने के बाद हिमांशी बोली– धत् पगली ! भला हम तुम्हारा कुछ नुकसान कर सकते हैं क्या ? हम दुश्मन थोड़ी ना है जो तुम्हें भांग खिला कर बदला लेंगे। तुम तो हमारी बेस्टी हो। रात गयी बात गयी। तभी खुशबूदार गेंदा, गुलाब, चमेली के फूल सब पर फेंकते हुए गीतांजलि कहने लगी- लेकिन असली मजा तो रंगों से आता है न। सो चलो फ्रेंड्स, थोड़ी मस्ती बाहर भी कर लेते हैं।

श्वेता बड़ी ही मुश्किल से बाहर निकली। इस बार माहौल सबसे अलग था। होली के रंगों में प्यार के रंग दिखाई देने लगे थे। हर्बल होली का रंग था न , भला कैसे किसी को नुकसान होता।

श्वेता यह सब देख एकदम भौचक रह गयी। तभी उसकी नजर पास में खड़े कुछ पुलिस वालों पर पड़ी। दिमाग में कुछ बातें आयी। उसने अपने मम्मी–पापा को भी देख लिया। मम्मी–पापा श्वेता के मन की बात समझ गये। श्वेता के पास आ कर बोले– देखो बिटिया रानी ! होली खेलना कोई गलत नहीं है, जैसा कि तुम समझती हो। यह हमारे पूर्वजों की आन–बान और सम्मान है। इसे जीवित रखना हमारा परम कर्तव्य है। पर हाँ, कुछ लोग नशे में धुत्त होकर हुडदंग करते हैं, ये नहीं होना चाहिए।

देखो, ये पुलिस वाले अपने परिवार को छोड़ कर हमारी सुरक्षा के लिए आये हैं, ताकि हम त्यौहार को पूरे एंजॉय कर सकें। फिर श्वेता के साथ सभी सहेलियों ने थोड़ा–थोड़ा रंग लेकर पुलिस वालों को लगाया; और उन्हें सैल्यूट किया। सबका एक ही कहना था- यह हमारी परंपरा है, जिसे हम कभी नहीं भूल सकते। इससे हममें स्नेह, भ्रातृत्व व एकता की भावनाएँ पनपती हैं। हाँ, हम खेलने का तरीका बदल सकते हैं, न कि होली खेलना। सबने एक-दूसरे को होली की बधाइयाँ दी। इस बार सबके मन में सतरंगी छटा छा गयी। सभी खुशी से झूम उठे- होली है भाई होली है... सरा.. ररा.. होली है।

प्रिया देवांगन प्रियू

गौरैया और किसान

एक गांव में बरखू नाम का एक किसान रहता था। उसका एक फलों का एक बागीचा था। जिसमें हर तरह के फलों का पेड़ था। बागीचे में हर तरह के पक्षिय का घोंसला था। किसान पक्षियों को रोज बागीचे में जमीन पर कपड़ बिछा कर खाने को दाना पानी रख देता था। सारे पक्षी दाना और पानी खा पी कर अपने घोंसले में चले जाते।

किसान के बागीचे में पहले बहुत सारी गौरा और गौरैया रहते थे। मगर इधर के कुछ सालों से बागीचे से सारी गौरा और गौरैया पता नहीं कहां चले गए। किसान सोच में पड़ गया कि आखिर बागीचे से गौरा गौरैया कहां चली गई।

एक रोज किसान एक जंगल से गुजर रहा तभी रास्ते में एक पीपल के पेड़ पर उसने बहुत सारे गौरा और गौरैया को बैठे देख कर किसान बहुत खुश हुआ। उसने सोचा क्यों न यहां से कुछ गौरा और गौरैया को पकड़कर लेचलूं इनको अपने घर में पालूंगा ऐसा मन में विचार कर के किसान कुछ गौरा और गौरैया को उनके घोंसले से पकड़कर एक झोले में बंद कर के घर की ओर चल दिया। घर पहुंच कर किसान ने सारे गौरा और गौरैया को एक पिंजरा में बंद कर के अपने घर के आंगन में टांग दिया।

किसान रोज गौरा और गौरैया को दाना पानी पिंजरे में खाने को रख देता। गौरा और गौरैया दाना पानी खा पीकर पिंजरे में पड़ रहते। एक रोज किसान जब दानापानी डालने पिंजरे के पास आया तो एक गौरैया किसान से पूछ पड़ी तुम हमें पिंजरे में क्यों बंद कर के रखते हो?

इतना सुनकर किसान बोला अगर मैं तुमको आजाद कर दूंगा तो तुम फिर जंगल में भाग जाओगी इसलिए तुम सब को पिंजरे में रखता हूं।

इतना सुनकर गौरैया बोली हम सब को जंगल का एक कारण है। जब से सारे किसान अपने सभी फसलों और बागीचे में जहरीली दवा का छिड़काव करने लगे उससे हम सारे गौरा और गौरैया फसल और फल खा कर मरने लगे अगर हम जंगल नहीं गए होते तो हम सब कब के विलुप्त हो गए होते।

गौरैया की बात सुनकर किसान बहुत दुखी हुआ और गौरैया से अपनी गल्ती की माफी मांग कर बोला अब मैं वदा करता हूं कि अपने खेतों और बागीचे में कभी जहरीला कीटनाशक दवा का छिड़काव नहीं करुंगा ताकी फिर तुम हम इंसानों की बस्ती छोड़कर जंगल में न जा सको। इतना कह कर किसान ने पिंजरे का फाटक खोल कर सारे गौरा और गौरैया को आजाद कर दिया।

उस दिन से गौरा और गौरया किसान के घर में अपना घोंसला बना कर रहने लगे।

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

गुल्लक के रुपये

संदीप के पापा शिव प्रसाद एक कुकर बनाने वाली फैक्टरी में मेकैनिक कीनौकरी करते थे। वो रोज सुबह अपनी सायकल से फैक्टरी जाते और शाम को सात बजे तक घर लौट आते धे।

एक दिन संदीप के पापा अपनी फैक्टरी से घर आ रहे थे।रास्ते मेंआजाद चौक पर पहुंचते ही पिछे से एक मोटर साइकिल वाले ने ठोकर मार कर भाग गया। उसे कोई नही पकड़ पाया। तभी उसी समय संतोष वर्मा जी वहा आ गए और संदीप के पापा शिव प्रसाद को पहचान गए और तुरंत एक ई रिक्शा मेंबैठा कर मेडिकल अस्पताल चल दिए। इस दुर्घटना की खबर संदीप को फोन पर दे कर अस्पताल आने की सूचना दे दिया।

फोन मिलते ही संदीप ने सारी जानकारी अपनी मम्मी को दे कर मम्मी के साथ ई रिक्शा से मेडिकल अस्पताल चल दिया। मेडिकल अस्पताल पहुंच कर संदीप ने देखा कि संदीप चाचा पापा के पास खड़ थे। पापा को ग्लूकोज चढ़या जा रहा था।

पापा की हालत देख कर संदीप की मां रोने लगी। तभी संतोष चाचा बोल पड़े आप रोना धोना छोड़कर इनका देख भाल कीजिए। मैं अपने घर चलता हूं। इतना कह कर संदीप चाचा अपने घर चले गए। कुछ देर के बाद डाक्टर ने एक्सरे दिखा कर बोला इनका दायां हाथ की हड्डी टूट गई है ।इसमे हमें राड डालनी पडेगी। यह दवा की पर्ची है यह सारी दवा ई तुमको बाहर मेडिकल स्टोर से लानी पड़ेगी।

संदीप ने दवा की पर्ची ले कर दवा लेने चल दिया। संदीप की मम्मी उसे रोक कर पूछ पड़ी बेटा तेरे पास रुपये हैं क्या ?

मम्मी की बात सुनकर संदीप बोला तू रुपये की चिन्ता मत कर मैंअभी दवा ले कर आता हूं।इतना कह कर संदीप रुपया लेने घर को चल दिया। घर पहुंच कर संदीप ने दो गुल्लक फोड़कर सारा रुपया एक झोले मेंरख कर अस्पताल को चल दिया। संदीप ने मेडिकल स्टोर से सारी दवा लेकर जब अस्पताल में पहुंचा तो देखा पापा से बात कर रही थी।

डाक्टर ने संदीप से दवा और इंजेक्शन ले कर उसके पापा को खिला और लगा दिया। फिर आपरेशन कर के हाथ में राड डाल कर उपर से प्लास्टर चढा कर बोले आप को एक सप्ताह तक यहां रुकना पड़ेगा इतना कह कर डाक्टर दूरे मरीज को देखने चल दिए ।

एक एक दिन बीतने लगा और देखते ही देखते एक सप्ताह गुजर गया। डाक्टर चेक कर के एक महीने की दवा मंगाकर संदीप को उसके मम्मी पापा के साथ घर आ गया।

पापा ने जब दवा में लगे रुपये के बारे में पूछा तो संदीप बताया कि हमने आप की दवा में सारा रुपया अपने गुल्लक को तोड़कर लगाया है। आप रोज जो रुपया हमें पाकेट खर्च के लिए देते थे उनसारे रुपयों को मैं अपने गुल्लक में रोज डाल देता था। इस तरह हमारे तीन गुल्लक रुपयों से भर लिया ,उन्हीं रुपयों से हमने आप का इलाज कराया अगर और रुपयों की जरुरत पडेंगी तो तीसरा गुल्लक फोड दूंगा। संदीप की बात सुनकर उसके पापा की आंखों में पानी आ गए।

संदीप के पापा ने कहा बेटा तुम रुपयों की जरा भी चिन्ता मत करना मैं ठीक होते रुपयों से फिर दोनों गुल्लक भर दूंगा। पापा की बात सुनकर संदीप खुशी से गदगद हो गया।

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

गुब्बारे वाले की कहानी

एक गाँव में रिंकू और पिंकी दोनों भाई-बहन अपने माता-पिता के साथ रहते थे. इसी गाँव में एक बूढ़ा व्यक्ति अपने परिवार के साथ रहता था. वह गुब्बारे बेचकर अपने परिवार का जीवन यापन करता था. कुछ दिन पश्चात गाँव में नए वर्ष के उपलक्ष्य में मेला लगने वाला था.वह गुब्बारे वाला व्यक्ति मेला में अपने गुब्बारे रखकर बेचने के लिए जा रहा था. तभी अचानक उसे चक्कर आया और वह जमीन में गिर गया.रिंकू और पिंकी भी मेला देखने जा रहा था.अचानक सड़क पर भीड़ लगी हुई थी.दोनों वहाँ पर जाकर देखा-वह कोई और नहीं गुब्बारे वाला ही था.दोनों बच्चे उसे उठाकर पानी पिलाया और कुछ खाने को दिया. ठीक होने के पश्चात दोनों भाई बहन मेला देखने चले गए.

मेले में टिंकू और पिंकी मौज मस्ती करते हुए पूरे मिले का भ्रमण किया.उसके बाद झूला झूले,ढेर सारे खिलौने लिए,मिठाइयां खरीदी तत्पश्चात अपने दोस्तों से मिला.उसके बाद घर की ओर निकल गए.

रास्ते में गुब्बारे वाले को देखकर गुब्बारे खरीदने की इच्छा हुई. लेकिन जेब को देखा,उसके पैसे खत्म हो चुके थे.उन दोनों पर बूढ़े व्यक्ति की नजर पड़ा.दोनों बच्चे को पहचान लिए. समझ गया कि यह दोनों बच्चे ही मुझे चक्कर आने पर पानी पिलाया था.तभी उन दोनों को परेशान देखकर गुब्बारे वाले कहता है-तुम परेशान क्यों हो? तभी रिंकू ने कहा-कुछ नहीं बाबा,घर जा रहें हैं,सोचा कि आपके हाल-चाल पूछ लें.गुब्बारे वाले बाबा को समझने में देर नहीं लगी.उन्होंने रिंकू और पिंकी को मुफ्त में गुब्बारे दिए.लेकिन दोनों बच्चे ने उसे लेने से मना कर दियेऔर उसे धन्यवाद कहा,तभी गुब्बारे वाले ने कहा धन्यवाद देने की बात नहीं है.मैं भी आपके दादा के समान हूँ.आप दोनों ने भी तो मुझे दादा जैसी देखभाल की है. इस कारण इस गुब्बारे को रख लो. दोनों बच्चों ने गुब्बारे रखकर उसे धन्यवाद दिया और खुशी-खुशी से घर चले गए.

कुमारी भूमिका राजपूत

लेख

रेडियो बादशाह

वैश्विक स्तरपर कुछ व्यक्तित्व गॉड गिफ्टेड या स्वयं अपनी मेहनत माता-पिता के सहयोग दोस्तों यारों रिश्तेदारों के सामर्थ्य से अपनी कला को इस तरह निखारते हैं कि वह दुनियां के लिए एक मिसाल बन जाते हैं, लोग उनका उस समर्थ क्षेत्र में उदाहरण और मसल देते हैं। कई पीढियां तक उनका गुणगान गाया जाता है। संगीत, कला, मानव सेवा सिनेमा, नेतृत्व, राजनीति, व्यापार व्यवसाय, स्वास्थ्य सहित अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जिसमें अनेक निपुण व्यक्तियों का अपने नॉलेज के बल पर जीते जी तो क्या उनके शरीर त्यागने के बाद भी उनकी कला के दम पर उन्हें हमेशा याद रखा जाता है। ऐसा ही एक नाम भारतीय रेडियो में आवाज की दुनिया के फनकार मखमली आवाज के धनी अमीन सयानी जी हैं, जो रेडियो पर उनके प्रोग्राम से सड़कों पर सन्नाटा छा जाता था। मेरे अपने राइट सिटी गोंदिया में मेरा परिवार इसका जीता जागता उदाहरण है। मेरे ग्रैंडफादर श्री स्व ईंदनदास जी भावनानी ने रेडियो पर बिनाका गीत माला जो प्रति बुधवार को आता था, बहुत ध्यान से सुनते थे साथ में मेरे पिताजी श्री स्व सनमुखदास जी भावनानी ने और फिर उनकी तीसरी पीढ़ी मैं भी बिना का गीतमाला रोज रात्रि 8 बजे से सुनते थे बहुत ध्यान से सुनकर एंजॉय करते थे। बाद में उसका नाम सिबाका गीत माला हो गया था।रेडियो क्षेत्र में अमीन साहनी की आवाज हमारे परिवार की तीन पीढियां ने बड़े चाव से सुनी। उसके बाद हमारी चौथी पीढ़ी इस नाम से थोड़ा सा अनजान जान पड़ती है। ऐसी शख्सियत का बुधवार दिनांक 21 फरवरी 2024 को 91 वर्ष की उम्र में निधन हो गया जिसकी जानकारी मीडिया में आते ही उनके फैन सदमें में में आ गए इससे हम जान सकते हैं कि वह कितनी बड़ी शख्सियत थे। चूंकि तीन पीढियां का मनोरंजन करने वाले रेडियो बादशाह पंच तत्वों में विलीन हो गए हैं इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, भाइयों और बहनों मैं आपका दोस्त अमीन सयानी बोल रहा हूं, थम गई यह रेडियो की बुलंद आवाज।

साथियों बात अगर हम अमीन सयानी के निधन की करें तो, भारतीयों की पीढ़ियों के लिए रेडियो को परिभाषित करने वाली महान आवाज़ अमीन सयानी का 91 वर्ष की आयु में निधन हो गया। अपने प्रतिष्ठित कार्यक्रम बिनाका गीतमाला के लिए जाने जाने वाले, सयानी की आवाज़ भारतीय घरों में एक प्रधान थी, जिसने देश भर में संगीत और इसके प्रेमियों के बीच की दूरी को पाट दिया। 20 फरवरी की शाम को उन्हें दिल का दौरा पड़ा और उन्हें दक्षिण मुंबई के एच एन रिलायंस अस्पताल ले जाया गया, जहां उन्होंने शाम 7 बजे के आसपास अंतिम सांस ली, जैसा कि उनके बेटे राजिल सयानी ने पुष्टि की है।

साथियों बात अगर हम अमीन सयानी के बारे में जानने की करें तो, उनका जन्म 21 दिसंबर 1932 मुंबई में हुआ। उन्होंने रेडियो की दुनिया में अपना बड़ा नाम स्थापित किया। दर्शक उनकी आवाज से सीधे तौर पर जुड़े और दिल थामकर उनके कार्यक्रम का इंतजार किया करते। अमीन सयानी ने रेडियो प्रेजेंटर के तौर पर अपने करियर की शुरुआत ऑल इंडिया रेडियो, मुंबई से की थी।उनके भाई हामिद सयानी ने उनका परिचय यहां से कराया था बता दें कि पचास हजार सेअधिक कार्यक्रमों का रिकॉर्ड दर्जरिपोर्ट्स के मुताबिक सयानी ने लगभग दस वर्षों तक अंग्रेजी कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। इसके बाद उन्होंने भारत में ऑल इंडिया रेडियो को लोकप्रिय बनाने में अहम भूमिका निभाई। रिपोर्ट्स के मुताबिक अमीन सयानी ने नाम पर 54, हज़ार से ज्यादा रेडियो कार्यक्रम प्रोड्यूस/वॉयसओवर करने का रिकॉर्ड दर्ज है। उन्होंने करीब 19, हज़ार जिंगल्स के लिए आवाज देने के लिए भी अमीन सयानी का नाम लिम्का बुक्स ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज है।फिल्मों में दर्ज कराई उपस्थिति रेडियो ने अमीन सयानी को जो पहचान दिलाई, वह बहुत आगे तक कई। वे कई फिल्मों में रेडियो अनाउंसर के तौर पर नजर आए। इनमें भूत बंगला, तीन देवियां, बॉक्सर और कत्ल जैसी फिल्में शामिल हैं। रेडियो की दुनिया में अपने योगदान के लिए अमीन सयानी को कई बड़े व प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान किए गए। इनमें लिविंग लीजेंड अवॉर्ड (2006), इंडियन सोसाइटी ऑफ एटवरटाइजमेंट की तरफ से गोल्ड मेडल (1991) , पर्सन ऑफ द ईयर अवॉर्ड (1992)- लिम्का बुक्स ऑफ रिकॉर्ड्स शामिल हैं। अमीन सयानी रेडियो के सबसे फेमस अनाउंस थेरेडियो सिलोन और फिर विविध भारती पर लगभग 42 सालों तक चलने वाला हिंदी गीतों का उनका कार्यक्रम बिनाका गीतमाला ने सफलता के सारे रिकॉर्ड तोड़े थे और लोग

हर हफ्ते उन्हें सुनने के लिए बेकरार रहा करते थे।गीतमाला के साथ अमीन भारत के पहले होस्ट गए थे जिन्होंने उभरते संगीत परिदृश्य के बारे में अपनी गहरी समझ को प्रदर्शित करते हुए एक कंप्लीट शो को क्यूरेट किया और प्रेजेंट किया था। शो की सक्सेस ने एक रेडियो वादक के रूप में सयानी की स्थिति को मजबूत कर दिया था।

साथियों बात अगर हम अमीन सयानी के प्रसिद्ध शो की करें तो,बिनाका गीतमाला साल 1952 में शुरू हुआ था। पहले ये कार्यक्रम रेडियो सिलोन पर आता था और उसके बाद ये विविध भारती पर शुरू हुआ। बिनाका गीतमाला का नाम बाद में सिबाका गीतमाला हो गया। ये कार्यक्रम 42 साल तक चला था। बिनाका गीतमाला साल 1952 में शुरू हुआ थाm पहले ये कार्यक्रम रेडियो सिलोन पर आता था और उसके बाद ये विविध भारती पर शुरू हुआ। नमस्ते बहनों और भाइयों, मैं आपका दोस्त अमीन सयानी बोल रहा हूं। परिचित अभिवादन और तुरंत पहचानी जाने वाली आवाज 1952 से 1988 तक रेडियो सीलोन पर हर बुधवार को अनगिनत घरों में प्रसारित होती थी, जो आज भी श्रोताओं के बीच मजबूत पुरानी यादों को जगाती है। अमीन रेडियो पर आने वाले शो बिनाका गीतमाला को होस्ट करते थे। 30 मिनट के इस रेडियो प्रोग्राम में एक के बाद एक एवरग्रीन गानों से अमीन श्रोताओं का मनोरंजन करते थे। ऑल इंडिया रेडियो के मशहूर अनाउंसर अमीन सयानी का बचपन से ही साहित्य में खास लगाव था। इसका खास कारण हैं कि अमीन की मां रहबर नामक समाचार पत्र निकालती थीं और उनके भाई हामिद सयानी भी रेडियो अनाउंसर थे। दरअसल, अमीन भी 1952 में रेडियो सीलोन से अपने करियर की शुरुआत की।अमीन का रेडियो से परिचय उनके भाई हामिद ने कराया था। बता दें कि, अमीन ने अपने करियर की शुरूआत इंग्लिश प्रोग्राम से की थी। फिल्मों में भी नजर आ चुके है अमीन, इन फिल्मों में आए नजर अमीन, कत्ल, तीन देवियां, भूत बंगला और बॉक्सर जैसी फिल्मों मे अभिनय कर चुके है। इन फिल्मों में वह शो के प्रेजेंटर के रोल में नजर आए थे इन फिल्मों में वह शो के प्रेजेंटर के रोल में नजर आए थे।

साथियों बात अगर हम माननीय प्रधानमंत्री द्वारा अमीन सयानी के निधन पर दुख व्यक्त करने की करें तो उन्होंने कहा रेडियो की दुनिया में अपनी मखमली आवाज से जादू बिखेरने वाले अमीन सयानी के निधन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी दुख जताया है। पीएम मोदी ने अमीन सयानी को श्रद्धांजलि देते हुए ट्वीट किया- अमीन सयानी जी की सुनहरी आवाज में एक आकर्षण और गर्मजोशी थी, जिसने उन्हें पीढ़ियों से लोगों का प्रिय बनाया. अपने काम के माध्यम से उन्होंने इंडियन ब्रॉडकास्टिंग में क्रांति लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और अपने लिस्नर्स के साथ एक खास बॉन्ड बनाया. उनके जाने से दुखी हूं।उनकी आत्मा को शांति मिले।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि तीन पीढ़ियों का मनोरंजन करने वाले रेडियो बादशाह पंचतत्व में विलीन।भारतीय रेडियो के जमाने के सरताज मखमली आवाज़ के धनी को सैल्यूट।भाइयों और बहनों मैं आपका दोस्त अमीन सयानी बोल रहा हूं, थम गई रेडियो की यह बुलंद आवाज

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया

होली के रंग

बाबू की खुशी का ठिकाना नहीं था। उसके बाबा का गांव से फोन आया था। बाबा चाहते थे कि बाबू गांव में पूरे परिवार के साथ होली मनाए। होली बाबू का प्रिय त्यौहार था। बाबू को शहर गए हुए एक वर्ष हो चुका था। गांव की पाठशाला से उसने आठवीं की परीक्षा पास की थी। पूरे जिले में वह प्रथम स्थान पर था। इसी बात से खुश होकर उसके चाचा उसे अपने साथ शहर ले गए थे। गांव में आठवीं तक ही स्कूल था। आगे की पढ़ाई के लिए दूर के गांव में ही एक स्कूल था। शहर में चाचा ने उसका दाखिला एक स्कूल में करवा दिया। चाचा दिन भर अपने काम पर रहते। चाची ही घर पर होती। उनका व्यवहार बाबू के साथ अच्छा नहीं था। अपने बेटे, डब्बू से वो खूब लाड लड़ाती लेकिन बाबू को एक नौकर से अधिक नहीं समझती। घर के काम उससे करवातीं। खाना भी सबके खाने के बाद ही देती। डब्बू भी गंवार कहकर उसे चिढ़ाता रहता था। चाचा का फ्लैट दो कमरों वाला था। एक कमरे में डब्बू पढ़ाई करता और दूसरे कमरे में चाचा चाची सोते। बाबू के न पढ़ने की जगह निश्चित थी न ही सोने की। दिन में बालकोनी में बैठकर पढ़ाई करता और रात में सबके सोने के बाद लॉबी में सोफे पर लेटकर सो जाता। अक्सर रात में बाबू अपने मां बाबा को याद करके रोता रहता परन्तु किसी से कुछ नहीं कहता। बाबा का बुलावा आया तो उसकी जान में जान आई। डब्बू गांव में नहीं जाना चाहता था किन्तु चाचा ने उसे जाने के मना लिया। चाची को भी मजबूर होकर साथ जाना ही पड़ा।

होली के दिन सुबह होली पूजन हुआ और शाम को होलिका दहन। डब्बू गांव में किसी से अधिक परिचित नहीं था इसलिए बाबू के साथ साथ ही घूम रहा था। बाबू के साथ वह पहले कभी इतने समय तक नहीं रहा था। अपने घर में भी नहीं। बाबू ने अपने सभी दोस्तों से उसका परिचय कराया। सभी उसके साथ खेल रहे थे। सबने मिलकर अगले दिन का कार्यक्रम निर्धारित किया। फाग पर गुलाल और रंग वाली होली खेलने का। गुपचुप योजना बनाई गई। डब्बू को सब समझ नहीं आया लेकिन वह खुश था।

सुबह डब्बू सोकर उठा तो बाबू घर में नहीं था। डब्बू उसे ढूंढते हुए घर से बाहर गया तो पहचान नहीं पाया। सबके चेहरे रंग से पुते हुए थे। बाबू को पहचानना मुश्किल था। डब्बू जब तक पहचान पाता तब तक उसके उपर रंग की बारिश होने लगी। अब वह भी उनकी तरह रंग से नहा गया। पहचानना मुश्किल था कि कौन बाबू है और कौन डब्बू। दोपहर तक जमकर सबने होली खेली। खूब धमाल मचाया। डब्बू ने पहली बार ऐसी होली देखी थी। वह जिस शहर में रहता था वहां होली कोई खेलता ही नहीं था। बारह बजे के बाद जब सबका रंग ख़तम हो गया तो बच्चे अपने अपने घर वापिस चले गए। डब्बू और बाबू भी घर लौट आए। खूब मल मल कर नहाए। नहाकर, बच्चे पकवानों पर टूट पड़े। होली पर विशेष पकवान बनाए गए थे। परिवार के सब लोग मिलकर त्यौहार का आनंद ले रहे थे। चाची बोली, बाबू अब अपना सामान भी समेट लेना, कल सुबह जाना भी है। बाबू जाकर मां से लिपट गया। नहीं जाऊंगा मां। उसने दृढ़ता से कहा। कोई कुछ कहता उससे पहले ही चाची शुरू हो गई, यहां गांव में रहोगे तो अपने उन गंवार दोस्तों के साथ ही घूमते रह जाओगे। पढ़ लिख कर कुछ बन ही जाओगे शहर में। बाबू ने डब्बू को देखा और फिर चाची की बात का जवाब दिया। चाची, शहर जाकर एक घरेलू नौकर बनने से कहीं अच्छा है गंवार बने रहना। मेरे दोस्त गांव में रहते हैं लेकिन इंसानियत जानते हैं। अपने रिश्तेदारों को नौकर नहीं मानते हैं। बाबू और भी बहुत कुछ बोलना चाहता था किन्तु बाबा ने उसे रोक दिया।चाची नाराज़ होकर अंदर चली गई। डब्बू बाबू के पास आकर बोला, मैं अपने और मां के व्यवहार के लिए तुमसे माफी मांगता हूं भाई। इस बार मैं तुम्हे अपने कमरे में ही रखूंगा। मैं जान गया हूं तुम कितने अच्छे हो। बस ज़िद छोड़ दो और मेरे साथ चलो। बाबू ने डब्बू को गले से लगा लिया। मैं तुम्हारा अगली होली पर अपने गांव में ही इंतजार करूंगा। फिर से मस्ती करेंगे। मेरे भाई मैं वहां नहीं जाऊंगा। नहीं पढ़ पाया तो खेती करूंगा पर एक इंसान बनूंगा। बाबू ने डब्बू को समझाते हुए कहा। मां बाबा उसकी बात से सहमत थे। चाचा सिर झुकाए खड़े थे। चाची मुंह फुलाकर बैठी थी। तभी डब्बू ने बाबू का हाथ खींचते हुए कहा, बाबू अभी तो खेल लेते हैं। कल तो मुझे फिर से वीडियो गेम ही खेलना पड़ेगा। बाबू हंसकर उसके साथ हो लिया।

अर्चना त्यागी

बाल पहेलियाँ

(1)
हरे रंग का पंछी,
चोंच लाल नुकीली।
कर लेता है नकल,
आदमी की बोली।

(2)
बरसात के ये कीड़े,
उड़-उड़ कर आये।
रात इन्हें अच्छे लगते,
गीत सुरीले गाये।

(3)
एक जानवर पालतू,
शरीर होता रोयेंदार।
चाल बड़ी मशहूर,
माने यह संसार।

(4)
हल्के-पीले रंग का पेड़,
होता बढ़िया छायेदार।
फल काले डण्डे जैसे,
पीले फूल करे श्रृंगार।

(5)
कहता है संसार इसे,
सबसे चालाक प्राणी।
बुद्धि होती बड़ी तीव्र,
बूझ पहेली मेरी रानी।

उत्तर- (1) तोता (2) झींगुर (3) भेड़ (4) अमलतास (5) आदमी।

टीकेश्वर सिन्हा ' गब्दीवाला '

बर्तनों की पहेलियाँ

1- लोहे का मैं पात्र निराला,
मुझ पर रख लो रोटी गोल।
रँग मेरा है काला-काला,
बूझो राधा रवि काजोल।।

2- तीन अक्षर मेरे नाम मे,
आते रामू भैया।
मध्य हटे तो 'चिटा' बनूँ मैं,
रखे हाथ में मैया।।

3- गोल-गोल सी रोटी को मैं,
मन से खूब नचाता।
मम्मी चाची, दादी को मैं,
सदा बहुत ही भाता।।

4- कभी इधर से कभी उधर से,
मम्मी घूँसा मारे।
दो अक्षर का नाम हमारा,
बोलो मोहन प्यारे।।

5-प्रथम हटे तो 'करी'बनूँ मैं,
मध्य हटे तो 'टोरी'।
ध्यान लगाकर बूझो प्यारे,
चंदन राज किशोरी।।

6- मध्य हटे तो 'करी'बनूँ मैं,
प्रथम हटे तो 'टोरी'।
दही साग मुझमें रख खाओ,
बोलो राज चकोरी।।

7- तीन अक्षर का नाम हमारा,
सुन लो रानी सुन लो भैया।
प्रथम हटे तो 'लास'बनूँ मैं,

8- पुआ बाजरे मीठे-मीठे,
रख मुझमें रोज बनाओ।
गर्म पकौड़े, गर्म मगौड़े,
तुम ले चटखारे खाओ।।

9- रोज पकाता रोज खिलाता,
चावल, सब्जी, दाल।
सीटी बजा - बजा कर बच्चो !
करता खूब धमाल।।

10- खीर कचौड़ी,पूड़ी सब्जी,
रख लो रोली लाली।
दो अक्षर का नाम हमारा,
कहते मुझको ___।

11- छन्न छन्न कर खूब नचाती,
पूड़ी पुआ पकौड़ी।
और नचाती दही बड़े को,
नाचे खूब कचौड़ी।।

12 अगर हटा दो पहला अक्षर,
'तीली' मैं बन जाऊँ।
तीन अक्षर का नाम हमारा,
बोलो क्या कहलाऊँ?

उत्तर 1-तवा, 2-चिमटा, 3-बेलन, 4-आटा 5- टोकरी, 6-कटोरी, 7-गिलास, 8-कड़ाही 9-कुकर, 10-थाली, 11-कलछुल, 12-पतीली

डॉ० कमलेन्द्र कुमार

1-सदा बनाऊँ रोटी सब्जी,

जलना मेरा काम।

हलवा पूड़ी जमकर खाओ,

बोलो मेरा नाम।।

2-लोग कहें संसार मुझे,

पर मैं पात्र निराला।

नीर,क्षीर तुम रख लो मुझमें,

बोलो प्यारे लाला।।

3-जहाँ बनाती प्यारी मम्मी,

भिन्न भिन्न पकवान।

और बनाती चाय पकौड़ी

बोलो रवि रहमान।।

4-शीतल जल मैं करने वाला,

पात्र अनोखा प्यारे।

गर्मी में सब चाहे मुझको,

बोलो राज दुलारे।।

उत्तर 1 चूल्हा, 2 जग, 3 रसोई घर, 4 घड़ा

डॉ० कमलेन्द्र कुमार

छत्तीसगढ़ी जनऊला

01- रहिथे बादर के ओ पार। सूरुज चंदा के घर द्वार।।
दिखथे नीला-नीला रंग। लगथे जइसे हावय संग।।

02- लकलक-लकलक बरते जाय। लाली करिया लपट उठाय।।
येखर ताकत सबो डराय। जेला पावय राख बनाय।।

03- जिनगी खातिर अमरित मान। जीव जगत के बसथे प्रान।।
भाप, बरफ येहा बन जाय। ऊपर ले खाल्हे बोहाय।।

04- दिखय नहीं पर चलथे जोर। सरसर-सरसर करथे शोर।।
जीव जगत के सिरतों आस। येखर बल मा सबके साँस।।

05- गोल-गोल मैं घूमत जाँव। बइठ सकँव नइ एक्के ठाँव।।
दाई कहिथे मोला संसार। रखँय तभो तरपौंरी पार।।

06- धरती के ये संग सहाय। ढेला, फुतका जघा कहाय।।
दुनिया भर ला ये उपजाय। आखिर अपने संग मिलाय।।

07- बड़े बिहनिया येहा आय। संझौती बेरा मा जाय।।
येखर संगे संग अँजोर। नइ ते अँधियारी घोर।।

08- सरी जगत के करथे सैर। भुँइयाँ मा नइ राखय पैर।।
दिन मा सोवय, जागय रात। करय अँजोरी रतिहा घात।।

09- गिनत-गिनत मनखे थक जाँय। बगरय बादर कहाँ समाँय।।
रतिहाकुन मा इन टिमटाम। बोलव झटपट का हे नाम।।

10-ना भुँइया मा माढ़ै भार। ना ऊपर मा रहय सवार।।
करै अँजोरी अउ अँधियार। कभू बरसजय मूसलधार।।

उत्तर 1 अगास 2आगी 3पानी 4 हवा 5 धरती 6 माटी 7 सुरुज 8 चंदा 9 चँदैनी 10 बादर

डॉ. कन्हैया साहू शिक्षक भाटापारा

भाखा जनउला

भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

1 गु				■	2 न	3			■
	■	■	■	4 चिं			■	■	4
6 म	7		8 टी		■	9	10		
11		■		■	12 घ	■		■	■
	■	13 बि		■		■	14		15 दे
■	16 ला		■	17 उ			■	■	
18 बी			■	19		■	20 सु		
	■	■	21 ब		■	■		■	
22				■	23 सु			■	■
	■	■	24			■	25 त		

बाएँ से दाएँ

1. गुलगुला
2. नाक का भाग
4. झींगा
6. शमशान
9. लसदार
11. पगली
13 अमरुद
14. तुरंत
16. गोंद
17. खुला
18. नर बिल्ली
19. खजेना, खाद्य वस्तु
20. दुबला
21. वड़ा
22. रात को घुमने वाला
23. याद
24. हिलता
25. तालाब

पिछले भाखा जनउला के उत्तर

1 ब	ही	र	हा	■	2 ब	न	3 ग	ई	हा
स	■	■	■	4 आ	न	■	म्म	■	■
5 न	6 च	का	7 र	■	8 गं	व	त	री	हा
9 हा	ना	■	10 खी	न	वा	■	हा	■	■
■	1 1 चु	री	या	ही	■	12 प	र	घो	13 नी
14 चु	र	■	■	■	15 पा	ती	■	■	च्च
च	■	16 क	17 भू	■	■	या	■	18 बा	ट
19 रुं	20 आ	■	21 स	ह	22 रा	य	■	टा	■
23 ग	रु	■	ड़ा	■	हे	■	24 ख	खों	री
■	25 ग	ऊँ	हा	■	र	■	26 पो	टा	■

ऊपर से नीचे

1. सोयाबीन बड़ी
2. तादात (हिंदी)
3. बांस का कोपल
7. रहेगी
8. एक छोटी चिड़िया का नाम
10. साल
12. बारम्बार
13. खरीदो
15. देवर का बीवी (हिंदी)
16. पुत्र, एक रंग
17. भुना धान का खाद्य वस्तु
18. सवेरे
20. आराम करता
21. सूअर
23. सो जा